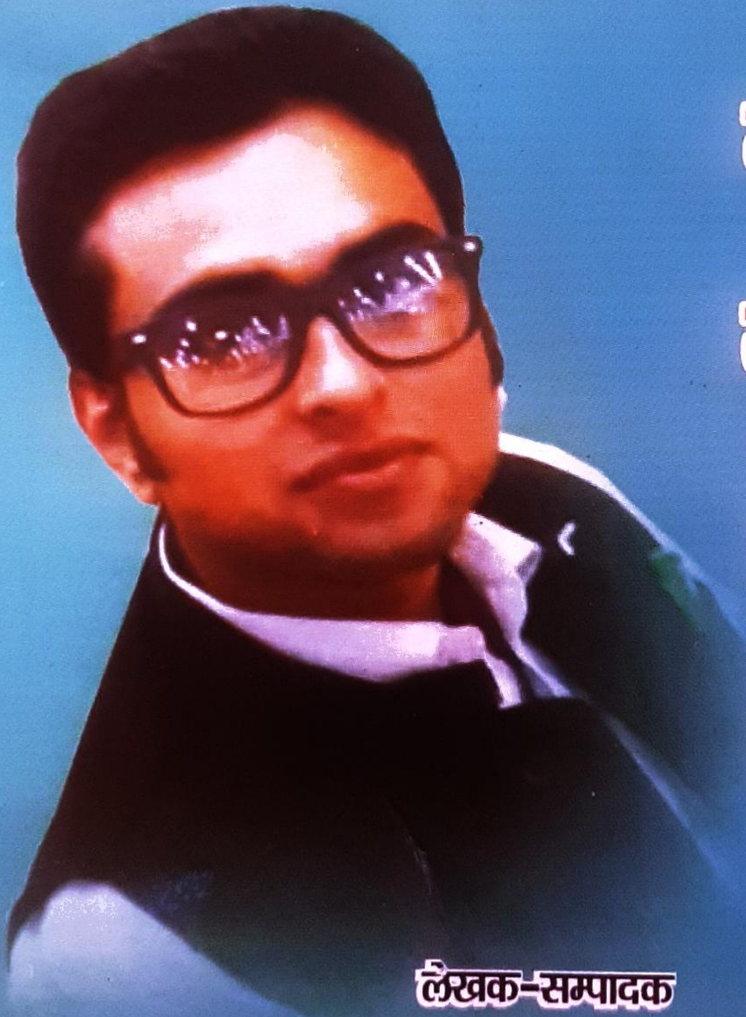
शेखर

भविष्णु

(प्रतियोगिता परीक्षा हेतु मैथिली भाषा-साहित्यक संक्षिप्त ज्ञान-कोश)



नेट

जे.आर.एफ.

टी.ई.टी.

विशेष

लेखक-सम्पादक

डा. रमण कुमार झा

 शेखर प्रकाशन, पटना

शेखर

भविष्णु

(प्रतियोगी परीक्षा हेतु मैथिली भाषा-साहित्यक संक्षिप्त ज्ञान-कोश)

(नेट, जे. आर. एफ., टी. ई. टी. विशेष)

लेखक-सम्पादक

डा० रमण कुमार झा

***

प्रबन्ध सम्पादक

राजाशेखर



शेखर प्रकाशन, पटना

प्रकाशक : **शेखर प्रकाशन**
2A/39, इन्द्रपुरी, पटना-800024
मो.-09334102305

प्रथम संस्करण : 2017
संशोधित द्वितीय संस्करण : 2020

अक्षरांकन : अजय कुमार (टुटु)

मुद्रक : **जय माता दी आफसेट**
मछुआटोली, पटना-4

मूल्य : 300/- टाका

शेखर प्रकाशन एवं श्री मंत्रेश्वर झा (रि. आइ.ए.एस.)क सहयोग सँ प्रकाशित

Bhavishnu
Written & Edited by : **Dr. Raman Kumar Jha**
Publisher : **Shekhar Prakashan,** Patna - 24; Price - 300/-

प्रकाशकीय

अक्षर-पुरुषक लोकार्पणक अवसर पर नेट-जे.आर.एफ. एवं शिक्षक पात्रताक परीक्षार्थी हेतु हम घोषणा तँ कऽ देलहुँ जे एहि विषयक पोथी शीघ्रहि प्रकाशित करब मुदा ई कार्य ततेक दुरुह छल जे बेस समय लागि गेल । चि० डा. 'रमण' कुमार झाक लेखन ओ सम्पादन तथा चि० राजाशेखरक प्रबन्धकीय कौशल सँ ई पोथी प्रस्तुत कऽ कोनहुना हम अपन साख बचा सकलहुँ तेँ एहि दुनू नवोदितकेँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छियनि ।

व्याख्याता ओ शिक्षक पात्रता परीक्षा हेतु कोनो टटका पोथी एखन दस वर्षसँ बाजारमे नहि आयल अछि । एहीसँ जानल जा सकैछ जे हम सभ अपन 'भविष्णु'क प्रति कतेक जागरूक छी । पहिने भाषा तखन साहित्य मुदा हम सभ साहित्यकार बनबा लेल अपस्यांत छी मुदा साहित्य पढ़त के ताहि लेल जमीन तैयार करब अपन दायित्व नहि बुझैत छी । प्राय: एही कारणे मैथिलीक कवि-साहित्यकार एक्के 'हरकारा' मे मंचपर जुमि जाइत छथि भने ओहिठाम हुनका सुनबा लेल हुनकर टोलीसँ दोबरो श्रोता उपस्थित होइन अथवा नहि । तेँ हम सदति एहि प्रयासमे रहैत छी जे साहित्यकार लोकनिक मान रक्षा लेल मैथिलीक भविष्णु-वर्ग अवश्य तैयार होथि आ तेँ एहि पोथीकेँ पढ़निहार-गुननिहारकेँ भविष्णु मानैत पोथीक नामकरण 'भविष्णु' कयलहुँ अछि ।

जेँ कि शेखर प्रकाशनक ई 'अर्घ्य' सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ अर्पित छनि तेँ आशा करैत छी जे हुनके सन सामर्थ, प्रखरता, विद्वता, प्रांजलता आ लोकप्रियता प्राप्त कऽ एहि पोथीकेँ पढ़निहार जीवन-पथपर अग्रसर होथि ।

28 मार्च, 2017
शेखर पुण्यतिथि

-शरदिन्दु चौधरी

प्रयोजन

वर्त्तमान समयमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकास अत्यन्त तेजी सँ भऽ रहल अछि । वर्ष 2004 ई.मे संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली सम्मिलित भेल। फलतः संघ लोकसेवा आयोगक परीक्षामे सेहो मैथिली ऐच्छिक विषय आ भाषाक रूपमे स्वीकृत भेल । आनो विषयक प्रतियोगी मैथिली भाषामे उत्तर लिखब प्रारंभ कयलनि । दीर्घकालीन संघर्षक बाद 1972 ई.मे मैथिली बिहार लोक सेवा आयोगक प्रतियोगिता परीक्षामे ऐच्छिक विषयक रूपमे सम्मिलित भेल छल जे राजनीतिक घात, परस्पर द्वेष-विद्वेषक शिकार बनि हटि गेल छल पुनः आवेदन, स्मारण पत्र उच्चतम न्यायालय आदिक माध्यमे वर्त्तमान शताब्दीक प्रथम दशकमे बिहार लोक सेवा आयोग मे प्रवेश पऔलक । प्रतियोगी छात्र लोकनिक लेल पाठ्य पुस्तकक अतिरिक्त पाठ्य सामग्री जुटयबामे शेखर प्रकाशनक प्रयास आ योगदान महत्वपूर्ण रहल अछि। 'गद्य गौरव'क प्रकाशन प्रतियोगी छात्र लोकनिक लेल अत्यन्त लाभकारी सिद्ध भऽ रहल अछि । यू.पी.एस.सीक परीक्षामे मैथिली विषयक परीक्षार्थी लोकनिकेँ निरंतर सफलता भेटि रहल छनि जाहि सँ विश्वविद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राक संख्यामे सेहो वृद्धि भऽ रहल अछि । गत वर्ष राज्यक विभिन्न विश्वविद्यालयक अन्तर्गत अंगीभूत महाविद्यालयमे मैथिली विषयक 49 टा व्याख्याताक नियुक्ति भेल। एखन धरिक इतिहासमे एक बेर एतेक संख्यामे कहियो मैथिलीक व्याख्याताक नियुक्ति नहि भेल छल । बिहार सरकारक शिक्षा मंत्री ई घोषणा कयलनि जे बहुत शीघ्र राज्यक विभिन्न महाविद्यालये नौ हजार (9000) व्याख्याताक नियुक्ति होयत । व्याख्याताक नियुक्तिक हेतु नेट परीक्षा पास रहब आवश्यक अर्हता अछि । छात्र लोकनि मे नेट, जे.आर.एफ. परीक्षा दिस रुझान अत्यधिक बढ़ल अछि। यू.जी.सी. (आब सी.बी.एस.सी.) वर्षमे दू बेर नेट परीक्षाक आयोजन करैत अछि। मैथिली मे नेट आ जे.आर.एफ. परीक्षा लेल कोनो छात्रोपयोगी पोथी उपलब्ध नहि रहबाक कारणे छात्र लोकनि केँ अत्यधिक कठिनता भऽ रहल छनि । छात्र लोकनिक एहि कठिनता आ परेशानी केँ दूर करबाक शेखर प्रकाशनक एकटा लघु आ विनम्र प्रयास थिक ई पोथी **'भविष्णु'** । ई पोथी विशेषतया नेट आ जे.आर.एफ. परीक्षार्थी लोकनिक आवश्यकता केँ ध्यान मे रखैत लिखल गेल अछि ।

समस्त अध्येता, शोधार्थी आ प्रतियोगी परीक्षार्थी लेल समर्पित शेखर प्रकाशनक दोसर कृति 'अक्षर पुरुष'क लोकार्पण 20 नवम्बर 2016 ई. केँ बिहार

रिसर्च सोसाइटीक सभागार मे सम्पन्न भेल । ओहि अवसर पर स्वनामधन्य पत्रकार सम्पादक आ शेखर प्रकाशनक स्वामी श्री शरदिन्दु चौधरी घोषणा कयलनि जे दू मासक अन्तर्गत नेट परीक्षार्थी लोकनिक लेल शेखर प्रकाशन एकटा पोथी प्रकाशित करत । सभागारे मे एहि दायित्व निर्वहनक भार हमरा दैत हमर नामोक घोषणा कऽ देलनि । श्री शरदिन्दु चौधरी केँ हम पत्रकार-सम्पादक सँ बेसी अभिभावक मानैत छियनि । हुनक आदेश मानि हम एहि दिशामे प्रयासरत भऽ गेलहुँ । अल्प अवधिमे अपन ज्ञान आ विवेकक सीमामे छात्रलोकनिक लेल नेट परीक्षोपयोगी सामग्री संकलित करबाक प्रयास कयने छी । एहि मे सँ किछु अंश पूर्वहुमे कतहु-ने-कतहु प्रकाशित भेल अछि । एकर अतिरिक्त नेट परीक्षाक पाठ्यक्रमक अनुसार जे किछु आवश्यक छल तकरा एहि पोथी मे समावेश करबाक प्रयास भेल अछि । पोथी सात अध्यायमे विभक्त अछि आ एहि पोथीक एक-एक पाँती नेट एवं शिक्षक पात्रता परीक्षार्थी लोकनिक लेल अत्यन्त उपयोगी अछि ।

हम कृतज्ञता आ आभार प्रकट करैत छी गुरुप्रवर प्रो. अमरेश पाठक, डॉ. लेखनाथ मिश्र, डॉ. बासुकीनाथ झा, डॉ. इन्द्रकान्त झा, डॉ. श्रीमती वीणा कर्ण आ डॉ. सत्यनारायण मेहता जीक जनिका लोकनिक प्रोत्साहन आ आशीर्वाद हमरा सतत् भेटि रहल अछि । एहि पोथी मे जे किछु नीक भेल अछि से एहि गुरु लोकनिक कृपा आ सम्पादक जीक निष्ठा आ समर्पणक प्रमाण थिक आ जे दोष अछि जे हमरा सन अत्यल्पक ज्ञान, विवेकक सीमाक परिचायक थिक । एहि कार्य केँ सम्पन्न करबामे सहयोग आ सुझाव देनिहार मित्र डॉ. अशोक कुमार मेहता, सुरेन्द्र राउतक अतिरिक्त धर्मपत्नी पिंकी (स्मिता) आ दुनू संतान सृष्टि आ रीशुक प्रति आभार प्रकट करब सेहो अपन कर्त्तव्य बुझैत छी । हमर ई प्रयास समर्पित अछि स्व. पिता (जितेन्द्र नारायण झा)क पुण्य-स्मृति केँ जनिक आशीष, स्नेह आ संबल जीवन पथक पाथेय बनल अछि । अन्य त्रुटिक लेल क्षमा प्रार्थी छी ।

- डॉ. रमण कुमार झा

दिनांक - 27 फरवरी, 2017 ई.

मो.-09431219534
09835424880

विषय-सूची

प्रथम अध्याय :	मिथिला एवं मैथिली / काव्यशास्त्र	7–29
दोसर अध्याय :	भाषा विज्ञान एवं व्याकरण	30–43
तेसर अध्याय :	लोक साहित्य, विभिन्न संस्था द्वारा पुरस्कार एवं सम्मान, साहित्यक प्रमुख विधा, मैथिलीक मान्यता एवं मैथिली साहित्यमे प्रथम, मैथिलीक E-पत्रकारिता	44–62
चारिम अध्याय :	पोथी ओ रचयिता	63–94
पाँचम अध्याय :	विभिन्न संस्था द्वारा प्रकाशित कृति	95–120
छठम अध्याय :	साहित्यकार एवं हुनक साहित्यिक परिचय	121–159
सातम अध्याय :	शब्द ओ शब्द समूहक संक्षिप्त परिचय, कवि लेखकक उपनाम एवं उपाधि	160–170
आठम अध्याय :	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	171–191



प्रथम-अध्याय

मिथिला एवं मैथिली

जे भूखण्ड एखन मिथिलाक नाम सँ जानल जाइत अछि तकर वृहद-विष्णु पुराण मे बारह टा नामक उल्लेख भेटैत अछि । मुदा एहि बारहो नाम मे विदेह, तीरभुक्ति एवं मिथिला नाम विशेष प्रसिद्ध अछि । एहि भूमिक हेतु प्रयुक्त 'विदेह' अथवा 'मिथिला' नामक उत्पत्ति विशुद्धत: पौराणिक अछि । प्राचीनकाल मे ई भू-भाग आर्य लोकनिक निवास स्थलक अतिपूर्व मे छल । कहल जाइत अछि जे उक्त प्रदेश अपन नाम सरस्वती तीर सँ आगत राजा विदेध माधव अथवा विदेह माधव सँ पओलक । शतपथ ब्राह्मणक अनुसार विदेध माधव अपन पुरोहित गौतम रहुगणक संग सरस्वतीक तट्ट सँ सदानीराक (गणडीक) तट पर आबि सर्वप्रथम अग्नि कें प्रज्वलित क' एहि भूमि कें पवित्र कयलनि । ई सत्य अछि जे माधवक आगमनक पश्चात अनेक ब्राह्मण एतय अयलाह आ एहि भूमि पर कृषि प्रारंभ भेल आ यज्ञ द्वारा अग्निकें संतृप्त कयल गेल । ओहि समयक परम्पराक अनुसार राजाक गोत्रनामक आधार पर हुनक जनपदक नाम विदेह भ' गेल । एहि नामक उल्लेख 'वेद' मे सेहो भेटैत अछि । तीरभुक्ति वा तिरहुत बादक नाम थिक । मिथिला नाम तीरभुक्ति वा तिरहुत सँ प्राचीन अछि । बाल्मीकि रामायण अथवा अन्य प्राचीन साहित्यमे तीरभुक्ति नाम नहि भेटैत अछि । सर्वप्रथम पुरुषोत्तम देवक 'त्रिकाण्ड शेष' मे उक्त नाम उपलब्ध होइत अछि । तिरहुत 'तीरभुक्ति' शब्दक तद्भव रूप अछि । मिथिला कें 'तीरभुक्ति' वा 'तिरहुत' कहल जयबाक मूल मे तीनटा कारण अछि -

(i) शाम्भकी, सुवर्ण कानन एवं तपोवन सँ भुक्तमान होयबाक कारणें एकरा तीरभुक्ति कहल गेल ।

(ii) कौशिकी, गंगा एवं गंडकीक तीर धरि एकर सीमा छल तें एकरा तीरभुक्ति कहल गेल ।

(iii) ऋक, यजु एवं साम एहि तीनू वेद सँ आहुति देनिहार ब्राह्मणगणक निवासक कारणें त्रिराहुति अर्थात 'तीरभुक्ति' नाम सँ ई भूमि प्रसिद्ध भेल ।

एहि तरहें प्रतीत होइत अछि जें 'तीरभुक्ति' स्पष्टतः 'तीर' आ 'भुक्ति' सँ व्युत्पन्न अछि ।

म०म० हरप्रसाद शास्त्रीक ई मान्यता समुचित छनि जे तीरभुक्ति गंगाक तट पर बसल प्रदेशक बोधक थिक तथा भुक्तिक प्रयोग एगारहम वा बारहम ई० सन मे प्रान्तक हेतु कयल गेल छल । हरप्रसाद शास्त्रीक धारणा छनि जे 'भुक्ति' शब्द बहुत प्राचीन नहि अछि । एकर प्रयोग सर्वप्रथम बारहम ई० सनमे सेन अभिलेख सभमे प्रदेशक हेतु कयल गेल अछि । हुनका मतानुसार एहि शब्दक प्रयोग तखन भेल जखन बंगालक सेन राजा लोकनि एहि प्रदेश कें जीति एतय अनेक ब्राह्मणलोकनि कें बसौलनि । इतिहासकार लोकनिक कथन छनि जे गुप्त शासनकालमे मिथिला 'तीरभुक्ति' नाम धराय कुमारादित्य द्वारा शासित होयब प्रारंभ भेल । ओहि काल मे 'भुक्ति' शब्द प्रान्तक अथवा प्रशासनिक मंडलक सूचक छल तथा 'तीर' नदी तट पर अवस्थित रहबाक बोधक छल । गुप्त साम्राज्य वैदिक कालहि सँ एकटा स्वतंत्र प्रभुसत्ताक रूपमे प्रतिष्ठित 'विदेह' पर अपन कुदृष्टि दऽ ओकरा पर प्रभुत्व स्थापित करबाक हेतु विदेह अथवा लिच्छवीक बज्जी संघ कें आत्मसात कऽ लेलक आ ओकर नवीन नामकरण 'तिरभुक्ति' क' ओकर शासन करब प्रारंभ कयलक ।

मुगलकाल, ब्रिटिशकाल सँ होइत स्वतंत्र भारतमे सेहो एखनधरि वैह 'तीरभुक्ति' 'तिरहुत' नाम सँ उत्तर बिहारक एकटा प्रशासनिक प्रमंडल बनल अछि । एहि नामक उल्लेख ज्योतिरीश्वरकृत 'वर्णरत्नाकर' मे सेहो भेटैत अछि । भूवैज्ञानिक लोकनिक कथन छनि जे सम्पूर्ण भारतमे तिरहुतक भू-भाग सभसँ पश्चात गठित भेल अछि । आइ सँ लगभग एक लाख वर्ष पूर्व एतय एकटा समुद्र छल जे हिमालय एवं विन्ध्य पर्वतमाला मध्य अरबक खाड़ी सँ बंगालक खाड़ी धरि पसरल छल । हिमालय प्रसूत नदी सभक संग प्रवाहित होइत रहनिहार माटिक संचयसँ हाल मे ई भूमि बनल अछि तें एतय कोनो पर्वत नहि अछि । एकर माटि परम उर्वर एवं कोमल अछि, छोट-पैघ नदी सभक जाल एतय पसरल अछि आओर तें नदी तटक ई देश तीरभुक्ति वा तिरहुत कहबैत अछि ।

मिथिला नामकरणक प्रसंग सेहो कतोक कथा प्रचलित अछि । एहि भूमिक उद्भवक एकटा रोचक कथा विष्णुपुराण मे भेटैत अछि जकर अनुसरण

श्रीमद्भागवत कयलक अछि । एकर अनुसार वैवश्वत मुनिक पुत्र इक्ष्वाकुक दोसर पुत्रक नाम निमिय छल । निमिय कें जीबैत स्वर्ग जयबाक इच्छा भेलनि आ ओ ताहि निमित्त वशिष्ठ सँ यज्ञ करबाक आग्रह कयलनि । मुदा वशिष्ठ पहिने सँ इन्द्रक यज्ञ करबाक भार गछि लेने रहथि । वशिष्ठ निमिक निमंत्रण स्वीकार तँ कऽ लेलनि किन्तु कहलथिन जे हम इन्द्र यज्ञमे सम्मिलित होयबाक हेतु वचनबद्ध छी तें हम पहिने ओतहि जायब आ ओतय सँ घुरलाक पश्चात अहाँक यज्ञ करायब । हुनका अयबा मे अत्यधिक विलम्बक कारणे निमिय गौतम ऋषि कें पुरोहित बना यज्ञ प्रारंभ कऽ देलनि । वशिष्ठ जखन इन्द्रक यज्ञ समाप्त कराय निमियक ओहि ठाम पहुँचलाह तँ वस्तुस्थिति देखि स्वयं कें अपमानित अनुभव कयलनि । वशिष्ठ क्रोधित भऽ निमिय कें श्राप दैत बजलाह – 'सद्यहः विदेहो भव ।' अर्थात हे निमि जाउ अहाँक शरीर नहि रहय विदेह भऽ जाउ । तहिना निमिय सेहो शाप देलनि । दुनू कें मृत्यु प्राप्त भेलनि । वशिष्ठ जीक आत्मा परकाया विधि द्वारा वरुणक शरीरमे निवास कयलनि जाहि सँ ओ वरुण मित्र नाम सँ सेहो जानल जाइत छथि । एक बेर वरुण उर्वशी कें देखि कामासक्त भऽ गेलाह आ हुनका वीर्य स्खलन भऽ गेलनि जकरा एकटा घैल मे राखल गेल जाहि सँ अगस्त्यक जन्म भेलनि आ ओ घटयोनि कहौलनि । किछु वीर्य छिटकि कऽ कमलक पात पर खसल जाहि सँ वशिष्ठ जी उत्पन्न भेलाह जिनका वेश्यापुत्र सेहो कहल गेल । निमियक मृत्युक पश्चात हुनकर आत्मा आँखिक भौंह पर निवास पौलनि तें निमि कहौलनि । उपस्थित ऋषिगण हुनकर शरीर कें मथि एकटा पुत्र उत्पन्न कयलनि जिनका 'मिथि' कहल गेल । मंथन सँ उत्पन्न होयबाक कारणें हुनक अन्य नाम 'मिथि', 'मिथिला', 'माधव' पड़ल तथा हुनके नाम पर 'मिथिला' नाम प्रचलित भेल । 'मिथिला' नाम वेद मे तँ नहि भेटैत अछि किन्तु याज्ञवल्क्य स्मृति, रामायण, भागवत एवं अन्यान्य परवर्ती ग्रन्थ मे एकर स्पष्ट उल्लेख भेटैत अछि । अपन पिताक शरीर सँ उत्पन्न होयबाक कारणें ओ 'जनक' सेहो कहौलनि । मिथि एक दक्ष राजा रहथि, ओ जे उपनगर बसौलनि से 'मिथिला' कहल गेल । पुरीक निर्माता होयबाक कारणे सेहो ओ जनक कहओलनि । मिथि सँ तदवंशीय आनो राजा सभ 'जनक' कहओलनि । मिथि प्रथम जनक छलाह । 'जनक' पारिवारिक नामक रूपमे प्रयुक्त भेल आ सीताजीक पिता एक्कैसम (नाम-सिरध्वज) जनक रहथि । विदेह जनकक

खानदान मे 57 टा राजा भेल रहथि ।

'पाणिनी'क अनुसार एतय शत्रुक दमन अर्थात शत्रु कें मथल जाइत छल तें एकर नाम 'मिथिला' पड़ल । मुदा ई व्युत्पत्ति काल्पनिक अछि ।

डॉ. सुभद्र झाक अनुसार 'मिथिला' शब्दक संबंध 'मिथ' युग्म सँ अछि । हिनक कथन छनि जे आधुनिक मिथिलामे प्राचीन युगक वैशाली, विदेह तथा अंग-ई तीनू प्रान्त अन्तर्भुक्त अछि । प्राचीन काल मे ई सब मिलिकय 'मिथिला' प्रान्तक निर्माण कयलक ।

पं. गोविन्द झाक अनुसार रामकथा एवं रामभक्तिक धारा मिथिला कें एकटा पुण्यतीर्थक रूपमे परिणत कऽ देलक आ तें भारतक जनता एहि जनपद कें 'मिथिला' नाम सँ जनैत अछि आ एहि शब्दक अनुसार मैथिलीक नामकरण सेहो भेल अछि ।

डॉ. मोतीचन्दक कथन छनि जे बौद्ध युगक पश्चात जखन भारतमे एकटा मिलल-जुलल हिन्दू संस्कृतिक विकास भ' रहल छल तखने 'तिरभुक्ति' नाम लोक व्यवहारमे तिरोहित होमय लागल तथा ओकर स्थानमे 'मिथिला' नाम आयल ।

जनक वंशक अंतिम राजा करालध्वज कें आचार्य लोकनि सत्ता सँ बेदखल कऽ देलनि । मिथिला बहुत दिन धरि राजा विहीन रहल । आचार्य लोकनिक देख-रेख मे पंचायती व्यवस्था बनल आ शासन व्यवस्था कें व्यवस्थित कयल गेल । वास्तवमे संसारमे सभ सँ पहिने प्रजातांत्रिक व्यवस्था मिथिले सँ प्रारम्भ भेल । वैशाली मे सेहो प्रजातांत्रिक व्यवस्था बहुत दिन धरि रहल । वैशालीक 'बज्जिसंघ' मिथिला पर आक्रमण कऽ अपन शासन स्थापित कयलनि । ओकर पश्चात-लिच्छवी, शैमुङग, नंद वंश, सुंगवंश कन्तवंश, गुप्तवंश आ वर्धन वंश आदि समय-समय पर मिथिला पर राज कयलनि ।

वर्धनवंशक अंतिम राजा जयवर्द्धनक पश्चात मिथिलामे पालवंश द्वारा तीन सय वर्ष धरि शासन कयल गेल । पालवंशक अंतिम राजा मदनपाल रहथि जे सेनवंशक सामंत लोकनि सँ पराजित भेलाह । सेनवंश मे पाँच टा राजा रहथि - सामंत सेन, हेमन्त सेन, विजय सेन, बल्लाल सेन आ लक्ष्मण सेन ।

एगारहम शताब्दीक अंत मे कर्णाट वंशीय राजा नान्यदेव लक्ष्मण सेन कें पराजित कय मिथिलामे कर्णाटवंशक शासन स्थापित कयलनि । ई पश्चिम

मिथिला केँ कब्जा कय सिमौनागढ़ (वीरगंज) मे डेरा जमौलनि आ पश्चात सम्पूर्ण मिथिला पर कब्जा कय कमलादित्य स्थानकेँ अपन राजधानी बनौलनि। नान्यदेवक पश्चात गंगदेव, नरसिंह देव, शक्तिसिंह देव एवं हरिसिंह देव राजा भेलाह । हरसिंह देवक समयमे मैथिल ब्राह्मण आ कायस्थक पंजी-व्यवस्था शुरु भेल ।

1326 ई. मे फिरोजशाह तुगलक मिथिला पर आक्रमण कयलक तखन महाराज हरसिंह देव अपन राजपाट राजपंडित पं. कामेश्वर ठाकुरक केँ जिम्मा लगा स्वयं नेपाल भागि गेलाह । हरसिंह देवक पलायनक पश्चात 27 वर्ष धरि मिथिला राजा विहीन रहल । 1353 ई. मे फिरोज शाह तुगलक पं. कामेश्वर ठाकुर केँ अपन कारद राजा नियुक्त कयलनि । जखन कामेश्वर ठाकुर कर वसूलीमे अक्षम भेलाह तखन सुल्तान हुनक पुत्र भोगीश्वर ठाकुर केँ मिथिलाक राजा बनौलनि । ई सभ ओइनी ग्रामवासी (मुजफ्फरपुर) रहथि तेँ ओइनवार राजा कहौलनि ।

भोगीश्वर ठाकुर केँ एकटा मुस्लिम जमींदार असलान साजिश सँ छुरा मारि हत्या कऽ देलनि । हिनक पुत्र कीर्तिसिंह एवं वीरसिंह तुगलक सुल्तान सँ मददि माँगलनि । युद्ध मे असलान आ वीरसिंह मारल गेलाह आ कीर्तिसिंह राजा बनलाह ।

पुनः भवसिंह राजा बनलाह । भवसिंह राजा भोगीश्वरक छोट भाय छलाह । संतान नहि होयबाक कारणे भोगीश्वर ठाकुरक वंश आगाँ नहि चलल तेँ भवसिंह (भवेश ठाकुर) राजा बनाओल गेलाह । भवसिंहक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र देवसिंह राजा भेलाह आ तकर पश्चात हुनक पुत्र राजा शिवसिंह । ई विद्यापतिक मित्र छलाह आ सम्राट केँ कर देनाई बन्द कऽ देलनि । 1416 ई.मे इब्राहिम शाह तुगलक मिथिला पर आक्रमण कऽ देलक जाहि युद्धमे शिवसिंह कतहु भागि गेलाह । रानी लखिमा द्रोणवार राजा (गढ़ बनैली) के राज्यमे 12 वर्ष समय व्यतीत कऽ सती भऽ गेलीह ।

राजा शिवसिंह संतानहीन छलाह तेँ हुनक छोट भाय राजा पद्मसिंह केँ राजा बनाओल गेल ।

1428 ई. मे पद्मसिंहक मृत्युक पश्चात रानी विश्वास देवी राज्यक काज अपना हाथमे लेलनि । रानी सेहो संतानविहीन रहथि तखन शिवसिंहक छोट भाय हरिसिंह आ तकर बाद नरसिंह राजा भेलाह । हिनक मृत्यु 1361 ई.

मे भेल । राजा नरसिंहक मृत्यु सँ एक वर्ष पहिने हुनक पुत्र धीरसिंह राजा बनलाह । धीरसिंहक बाद हुनक छोट भाय भैरव सिंह राजा बनलाह । हिनक मृत्यु 1381 ई.मे भेल । तकर पश्चात हिनक पुत्र रामभद्रसिंह देव राजा भेलाह । ई ओइनीवार वंशक अंतिम राजा सिद्ध भेलाह ।

1526 ई.मे सिकन्दर लोदी द्वारा मिथिला पर आक्रमण भेल आ ओ अपन जमाय अलाउद्दीन कें मिथिलाक शासक नियुक्त कयलनि । ताधरि दिल्ली मे मुगल वंशक शासन स्थापित भऽ गेल छल । एकर पश्चात् लगभग 50 वर्ष धरि मिथिलापर मुसलमानक शासन रहल । 50 वर्षक बाद जखन अकबर महान दिल्लीक शासक बनलाह तँ ओ मिथिला मे शांतिक प्रयास कयलनि । ओ मिथिलाक राज्य रघुनन्दन राय द्वारा हुनक गुरु (संस्कृतक अकबर नामाक लेखक) राजपंडित चंद्रपति ठाकुरक माझिल पुत्र महेशठाकुर कें मिथिलाक शासक बनौलनि । महेशठाकुरक मूल खड़ओर छलनि हुनक राजवंश खण्डवलाकुल कहाओल ।

महेश ठाकुरक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र गोपाल ठाकुर राजा भेलाह । अल्पायु मे मृत्यु होयबाक कारणे हुनक छोट भाय परमानंद ठाकुर राजा भेलाह। हुनक मृत्युक बाद महेशठाकुरक पाँचम पुत्र शुभंकर ठाकुर राजा भेलाह । शुभंकर ठाकुरक बाद हुनक पुत्र पुरुषोत्तम ठाकुर राजा बनलाह जे 1623 ई. मे एकटा षडयंत्र मे मारल गेल । तकर बाद हुनक सातम भाय नारायण ठाकुर राजा भेलाह । नारायण ठाकुरक 1645 ई.मे मृत्यु भेलाक उपरान्त हुनक बालक सुंदर ठाकुर आ तकर बाद महिनाथ ठाकुर राजा भेलाह। तखन दिल्लीक गद्दी पर औरंगजेब आबि चुकल छल । महिनाथ ठाकुरक बाद हुनक पुत्र नरपति ठाकुर राजा बनलाह जे अपन राजधानी राजग्राम सँ दरभंगा स्थांतरित कयलनि जे एखनो रामबाग कहबैत अछि । वृद्धावस्थामे ओ अपन प्रतापी पुत्र राघवसिंह कें राज-पाट सौंपि काशीवास हेतु प्रस्थान कयलनि ।

राघव सिंह महान योद्धा छलाह । हुनक मृत्युक पश्चात हुनक ज्येष्ठ पुत्र विष्णु सिंह राजा भेलाह । ओ मात्र चारि वर्ष शासन कयलनि । मकवानपुर (नेपालक) जमींदार छल सँ जनकपुर बजा हुनक हत्या कय देल । तत्पश्चात हुनक छोट भाय नरेन्द्र सिंह राजा बनलाह । 1760 ई. मे नरेन्द्र सिंहक मृत्युक बाद हुनक पितिऔत प्रताप सिंह आ तकर पश्चात माधव सिंह राजा भेलाह । ताधरि अंग्रेज भारतमे अपन जड़ि जमा चुकल छल । 1807 ई. मे दरभंगा

महाराज माधव सिंहक बाद हुनक पुत्र छत्रसिंह तकर पश्चात रुद्रसिंह आ तकर बाद महेश्वर सिंह गद्दी पर बैसलाह । 1860 ई. मे महेश्वर सिंहक मृत्युक समय हुनक बालक लक्ष्मीश्वर सिंह अबोध छलाह तेँ अंग्रेज सरकार दरभंगा राज केँ 'कोर्ट ऑफ वार्डस' अन्तर्गत राखि देलक ।

21 वर्षक अवस्थो भेला पर लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा लिखित क्लेम (दावा) कयला पर मिथिला राज्य हुनका भेंटि गेल ।

1912 ई. मे बंगाल विभाजनक समय मिथिला अलग राज्य नहि बनि सकल अपितु बिहारक अन्तर्गत राखल गेल । महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक मृत्युक बाद रमेश्वर सिंह राजा बनलाह आ तकर बाद जे महाराजा बनलाह ओ छथि कामेश्वर सिंह । कामेश्वर सिंह मिथिलाक अंतिम महाराजा छथि । 1947 ई. मे स्वतंत्रताक पश्चात महाराजक शासन समाप्त भऽ गेल ।

1912 ई.मे बंगाल सँ बिहार 1936 ई. मे बंगाल सँ उड़ीसा आ 2000 ई. बिहार सँ झारखंड अलग भेल ।

मिथिलाक भौगोलिक सीमा :

मिथिलाक सीमाक प्रसंग परम्परागत मत ई अछि जे ई भूखंड उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा, पूरब मे कौशिकी आ पश्चिम मे गंडकी नदी धरि विस्तृत अछि । उपर्युक्त धारणा केँ कवीश्वर चन्दा झा निम्नलिखित पद मे एना स्पष्ट कयने छथि ।

गंगा बहथि जनिक दक्षिण पूर्व कौशिकी धारा ।
पश्चिम बहथि गंडकी उत्तम हिमवत बल विस्तारा ।
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा बागमती कृतसारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणां प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ।

वस्तुतः मिथिलाक भौगोलिक सीमाक अन्तर्गत पुरना मुजफ्फरपुर, पुरना दरभंगा, सहरसा, चम्पारण, उत्तरी मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, पूर्णियाक किछु भाग तथा नेपाल राज्यक रौताहट, सरलाही, सप्तरी, मोहतरी, तथा मोरंग जिला अबैत अछि ।

मैथिली भाषा :

मैथिली आर्यभाषा परिवारक एक प्राचीनतम भाषा थिक । महर्षि बाल्मीकि अपन रामायणक सुंदर कांड मे लिखने छथि जे अशोक वाटिका मे हनुमानजी सीता जी सँ 'मानुषी भाषा' मे गप्प कयलनि । विद्वान लोकनिक

मानब छनि ई मानुषी भाषा मिथिला भाषाक प्राचीन स्वरूप होयत। ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति एकरा देसिल बयना (अवहट्ठ) कहने छथि। लोचन एहि भाषा केँ मिथिलापभ्रंश भाषा कहलनि। मैथिलीक दोसर नाम 'तिरहुतिया' सेहो भेटैत अछि। एकर उल्लेख 1771 ई.क बेलिगत्तीकृत (Belgalti) 'अल्फाबेटुम ब्राह्मनिकम क अम्दुजक भूमिका मे भेल अछि। एकर प्राचीनतम उल्लेख 'आइने अकबरी' मे भेटैत अछि जतय लेखक एकरा पृथक भाषाक रूपमे स्वीकार कयने छथि। एकर अतिरिक्त S.W. Felton, विशप कैम्पबेल, डॉ. हॉर्नले आ केलाग द्वारा अनेक स्थल पर मिथिला भाषा मैथिलीक चर्चा भेल अछि। जें भाषा आइ 'मैथिली' नामे जानल जाइत अछि तकर उल्लेख, सर्वप्रथम, यूरोपीय विद्वान 'कोलब्रुक' द्वारा 1801 ई. मे भेल अछि। पाश्चात्य विद्वान लोकनि मे मैथिलीक उल्लेखनीय सेवा डॉ. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1841-1941) कयलनि। वस्तुतः ग्रियर्सन द्वारा मैथिली शब्दक प्रचार-प्रसार कयल गेल आ मिथिलाक भाषाक अर्थमे प्रयुक्त कयल गेल।

कवीश्वर चन्दा झा पहिल अक्षर-पुरुष भेलाह जे एहि भाषा केँ 'मिथिला भाषा' कहलनि।

मैथिली विश्वक समस्त भाषा कुलमे सर्वाधिक महत्व रखनिहार भारोपीय परिवार सँ सम्पृक्त एक प्रमुख भारतीय आर्यभाषा थिक। मैथिली भाषाक विकास भारोपीय भाषा कुलक वैदिक रूप छन्दसक प्राच्य शाखा मागधी नामक प्राकृत अपभ्रंश सँ भेल अछि।



काव्यक परिभाषा

(i) नाट्यशास्त्रक रचयिता आचार्य भरतमुनि ।

(ii) काव्यालंकारक रचयिता भामह – शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् ।

(iii) काव्यादर्शक रचयिता आचार्य दण्डी – काव्यशोभाकरान धर्मालंकारान प्रचक्षतते ।''

(iv) काव्यलंकार सूत्रवृत्तिक रचयिता आचार्य वामन– "रीतिरात्मा काव्यस्य"।

(v) काव्यलंकारसारक रचयिता आचार्य उद्भटक ।

(vi) काव्यलंकारक रचयिता आचार्य रूद्रट :– "ननु शब्दार्थो काव्यम ।"

(vii) ध्वन्यालोकक रचयिता आचार्य आनन्दवर्द्धन :–
"काव्यस्यात्मा स एवार्थः ।"

(viii) काव्यप्रकाशक रचयिता आचार्य मम्मट :– "तददोषौ शब्दार्थो सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि"।

(ix) 'साहित्यदर्पण'क रचयिता आचार्य विश्वनाथ – "वाक्यं रसात्सकं काव्यम "।

(x) रसगंगाधरक रचयिता पंडित जगन्नाथ – "रमणीयार्थ प्रतिपादक : शब्दः काव्यम् ।



रस-विवेचन

नाट्यशास्त्र रचयिता आचार्य विश्वनाथ रसकेँ परिभाषित करैत कहने छथि "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रसनिष्पत्ति:" अर्थात विभाव, अनुभाव आ संचारी वा व्यभिचारी भावक संयोग सँ रसक निष्पत्ति होइत अछि ।

मोनक विचार भाव कहबैत अछि । हृदयमे वासना रूपमे स्थित रहनिहार भाव स्थायीभाव कहबैत अछि । एकरा कोनो अनुकूल वा प्रतिकूल भाव नहि तँ दबा सकैत अछि आ नहि झाँपि सकैत अछि । सहृदय लोकनिक हृदयमे रति आदि स्थायीभाव उद्दीपनक कारणे विभाव कहबैत अछि । जे मनुष्यक स्थायीभाव केँ उद्दीप्त कऽ दैत अछि विभाव कहबैत अछि । एकर दू भेद होइत अछि – (i) आलम्बन विभाव (ii) उद्दीपन विभाव ।

जाहि ठाम नायक वा विषयक अवलम्बन सँ रसक उद्रेक जेना-**राम**, सीता आदि होइत अछि ओकरा आलम्बन विभाव कहल जाइछ । उद्दीपन विभाव ओहन वस्तु वा स्थिति केँ कहल जाइछ – जकरा देखि स्थायी भाव तीव्रतर वा उद्दीप्त होइत अछि । जेना – चन्द्रोदय, कोकिल, उपवन आदि ।

	रस	**स्थायीभाव**	**गुण**	**सहायक रस**	**अनुभाव**	**संचारीभाव**
(i)	श्रृंगार	रति	माधुर्य प्रसाद	हास्य, अद्भुत	आलिंगन, चुंबन	श्रम, मोह मद
(ii)	हास्य	हास	प्रसाद	संयोग, वीर, शान्त, रौद्र	अश्रुपात	श्रम, आलस्य निद्रा
(iii)	करुण	शोक	माधुर्य	रौद्र, भयानक वीर, वात्सल्य	रूदन; प्रलय	निर्वेद, मोह, ग्लानि
(iv)	रौद्र	क्रोध	ओज	वीर, वीभत्स	दाँत पीसब, आँखि लाल करब	गर्व, मद अमर्ष
(v)	वीर	उत्साह	ओज, प्रसाद	हास्य, करूण	उत्साहपूर्णवाणी रोमांच	गर्व, हर्ष
(vi)	भयानक	भय	ओज, अद्भूत	मुख रूदन	त्रास, शंका	चिंता
(vii)	अद्भुत	विस्मय	प्रसाद	श्रृंगार	नेत्रक विस्फारण	भ्रांति, आवेग

(viii)	वीभत्स	घृणा वा जुगुरप्सा	ओज एवं प्रसाद	हास्य, अद्भूत करुण, वीर	मुँह फेरब नाक मुनब	निर्वेद, ग्लानि
(ix)	शान्त	निर्वद वा शम	माधुर्य	करूण, अद्भूत	अश्रुपात, शांतिमयता	हर्ष, विषाद
(x)	वात्सल्य	स्नेह वा	माधुर्य	करुण, हास्य	अंगस्पर्श	

रस-निष्पत्तिक सिद्धान्त

(i) भट्टलोल्टक – उत्पत्तिवाद वा आरोपवाद

(ii) भट्ट शंकुक – अनुमतिवाद वा अनुमानवाद

(iii) भट्ट नायक – भुक्तिवाद वा भोगवाद

(iv) अभिनवगुप्तक – अभिव्यक्तिवाद



अलंकार

'अलंकरोति इति अलंकार :' अर्थात जाहि उपकरण सँ काव्यक सौन्दर्य पूर्ण होइछ ओकरा अलंकार कहल जाइछ । 'काव्यदर्श'क रचयिता आचार्य दण्डी अलंकारकेँ परिभाषित करैत लिखने छथि – "काव्यशोभाकरान धर्मालंकरान प्रचक्षते" अर्थात काव्यक शोभाकर धर्म अलंकार कहबैछ । अलंकार दुई शब्दक योग सँ बनल अछि – अलम्+कार । 'अलम' शब्दक अर्थ होइछ आभूषण आ 'कार' शब्दक अर्थ होइछ कयनिहार अर्थात जे सौन्दर्यकेँ पूर्ण करय, पर्याप्त बना दिअय, अलंकृत करय अथवा जाहि सँ अलंकृत कयल जाय ।

काव्यमे अलंकारक स्थान महत्वपूर्ण अछि । मुदा सुन्दर सरल काव्य अलंकार रहितो रहला पर काव्य मर्मज्ञ केँ आनंदित कय दैत अछि । ई सत्य अछि जे स्वर्णालंकारहीना शकुन्तला वनमे जेहन सुन्दर लगैत छलीह तेहन दुष्यन्तक दरबारमे सोलहो श्रृंगार कयने उत्तर नहि । अर्थात काव्यमे अलंकारक स्थान महत्वपूर्ण अवश्य अछि मुदा ओ रस आ गुणक स्थान कथमपि नहि ल' सकैत अछि । वस्तुतः जहिना नारीक बाह्य आकर्षण क्षमता मात्र ओकर नारीत्वक सभ किछु नहि छैक असल वस्तु छैक ओकर हृदयक कोमल भाव, लज्जाशीलता, प्रेम, दया आदि गुण तहिना बाह्य आकर्षण क्षमता जे शब्दालंकार एवं अर्थालंकार सैह काव्यक सभ किछु नहि अछि ।

अलंकारक तीन भेद होइत अछि (i) **शब्दालंकार** (ii) **अर्थालंकार** (iii) **उभयालंकार ।**

जाहिठाम शब्दाश्रित अलंकार होइछ ओकरा शब्दालंकार कहल जाइछ । ई छः प्रकारक होइत अछि । (i) अनुप्रास (ii) बक्रोक्ति (iii) श्लेष (iv) यमक (v) पुनरुक्ति वा वीप्सा (vi) पुनरूक्तवदाभास ।

(i) **अनुप्रास :** आचार्य मम्मट अनुप्रास अलंकार केँ परिभाषित करैत लिखैत छथि – "वर्णा साम्यनुप्रासः" अर्थात समान वर्णक बेर-बेर आवृत्ति अनुप्रास अलंकार कहबैत अछि ।

जेना ; 'लोक कपोल ललित मणि कुंडल, अधर विम्ब अध जाई' ई

पाँच प्रकारक होइत अछि – (i) श्रृत्यानुप्रास (ii) छेकानुप्रास (iii) वृत्यानुप्रास (iv) लाटानुप्रास (v) अन्त्यानुप्रास ।

(ii) **वक्रोक्ति :** जँ श्रोता वक्ताक अन्यार्थक बातक अन्य अर्थ बूझि जाथि तँ ओतय वक्रोक्ति अलंकार होइत अछि । वक्रोक्तिक अर्थ होइछ – टेढ़ उक्ति

जेना : 'हे सखि भानस सँ अधिक परसबमे श्रम होय, परसब दुख से जान सखि जकरा परसब होय ।

(ii) कदमक फूल मोहन नहि देल
देल तँ मोर की कय लेल
हरि नहि कहलहुँ हम ई बात
कहलौं तें की जायब कात ।

(iii) **श्लेष :** जाहि शब्दमे अनेक अर्थ सटल रहय ओतय श्लेष अलंकार होइत अछि । ई दू प्रकारक होइत अछि ।

(i) सभंग श्लेष (ii) अभङ्ग श्लेष

जाहि दू शब्दकें तोड़ला सँ एक सँ बेसी अर्थ बाहर होइत अछि ओतय सभंग श्लेष आ जाहि शब्दकें बिनु तोड़ने अनेक अर्थ बाहर होइत अछि ओकरा अभङ्ग श्लेष कहल जाइत अछि ।

जेना : (i) भोर भेल द्विजकर स्वर पसारल । एतय द्विज शब्दक अर्थ ब्राह्मण आ कोइली दूनू होइत अछि आ भोरकें स्वर पसारब संदर्भ मे दुनू प्रासांगिक अछि ।

(ii) जनिक जनक कश्यप स्वयं लोकवेद मे ख्यात । से यदि सेवथि वारुणी तँ की अद्भुत बात ?

एहि ठाम **कश्यपक** अर्थ काश्यप महंषि एवं दारु, ताड़ी बेचनिहार एवं वारूणीक अर्थ **पश्चिम दिशा** आ **मेघ** होइत अछि ।

(iv) **यमक :** सार्थक रहितहुँ भिन्न अर्थ रखनिहार स्वर व्यंजन समूहक क्रमशः आवृत्तिकें यमक अलंकार कहल जाइछ ।

जेना : सारंग नयन वयन पुनि सारंग सारंग तसु समधाने
सागर ऊपर उगल दस सारंग केलि करथि मधुपाने ।"

(v) **पुनरूक्ति वा वीप्सा** – 'भाव विशेषक तीव्र सम्प्रेषण हेतु जतय आनन्द, उल्लास वा विस्मय आदि सँ प्रेरित भए शब्द विशेष कें दोहराओल जाइत

अछि ओतय पुनरूक्ति वा वीप्सा अलंकार होइत अछि ।

जेना : 'हरि-हरि के देल दारूण बाधा

नयनक साध आध नहि पूरल पलटि न हेरल राधा'

एतय प्रथम पंक्तिमे विस्मय सँ प्रेरित भऽ 'हरि' शब्दकेँ दोहराओल गेल अछि ।

(vi) **पुनरूक्त वदाभास** – 'भिन्न आकारक शब्द सभक अर्थमे पुनरूक्तिक प्रतीतिकेँ पुनरूक्तवदाभास अलंकार कहल जाइत अछि । एहि अलंकारमे शब्दक पुनरुक्ति नहि रहैत अछि अपितु शब्द सभक सन्निवेश ताहि प्रकारेँ भेल रहैत अछि जे पुनरूक्ति सदृश प्रतीत होइत अछि ।

जेना : घनश्याम चर्तुभुज दानबारि

बाहर भीतर तुर्वसु निहारि ।

एतय धनश्याम चतुर्भुज एवं दानवारिक एके अर्थ 'भगवान विष्णु' अछि मुदा अर्थबोधक पश्चात पुनरूक्तिक निराकरण भ' जाइत अछि ।

अर्थालकार

जाहिठाम अर्थाश्रित अलंकार रहैत अछि ओतय अर्थालकार होइत अछि । एकर प्रमुख भेद निम्नलिखित अछि ।

(i) **उपमा** – दू वस्तुमे मेल नहियो रहला पर जखन गुण, आकृति आदिमे तुलनाा कयल जाइत अछि ओतय उपमा अलंकार होइत अछि ।

जेना – (i) नायिकाक मुख कमल समान सुन्दर अछि ।

(ii) व्यसनी जनक विद्या जकाँ कमलक छवि घटि गेल ।

कृपणक धनक समान पुनि, आँखि निरर्थक भेल ।

(ii) **प्रतीप** – जाहि ठाम उपमान सँ उपमेयक अनादर कयल जाइत अछि ओतय प्रतीप अलंकार होइत अछि ।

जेना – सर्प । करह नहि दर्प जे हमहि जगतमे एका विषधर तोहर सदृश अछि दुर्जन वृन्द अनेक ।

(iii) **रूपक** : जतय उपमेयमे उपमानक अभेद प्रतीति देखाओल जाइत अछि ओतय रूपक अलंकार होइत अछि ।

जेना – श्री कामेश्वर नृप – सुजस सरद राकेश (पूर्ण चन्द) जनिक किरण सँ दिवस निसि, अछि धवलित सब देश ।

(iv) **उल्लेख** - जतय उपमेयमे अनेक व्यक्ति द्वारा एकहि समयमे अनेक उपमानक अभेद आरोप होअय ओतय उल्लेख अलंकार होइत अछि ।

(v) **व्यतिरेक** - जतय उपमानक अपेक्षा उपमेयक उत्कर्षक वर्णन होअय ओतय व्यतिरेक अलंकार होइत अछि ।

(i) कबरी भय चामरि गिरि कन्दर मुख भय चाँद अकासे

(ii) सुन्दरि । तव दृग कमल सन किन्तु दोष अछि एक
कखनहुँ-कखनहुँ टेढ़ भै मुनिहुक हरय विवेक ।।

(vi) **अप्रस्तुत प्रशंसा** - जतय अप्रस्तुत विषयक वर्णन सँ अर्थात उपमानक वर्णन सँ प्रस्तुत विषयक (उपमेयक) बोध कराओल जाय तँ ओतय अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार होइत अछि ।

जेना - करय ने आनक आस जे, तजि स्वातिक धन एक
खग मे एक रखैत अछि, चातक उचित विवेक ।

भ्रांतिमान अलंकार - रूप, गुण, आकृति आदि सँ जे उपमेयमे उपमानक भ्रम होअय तँ ओतय भ्रान्तिमान अलंकार होइत अछि ।

जेना - दूरहि सँ लखि अरूण छवि, सुमुखिक सुन्दर ठोर
आयल कीर समीप उड़ि, बुझल पाकल तिलकोर ।

सन्देह- रूप आदिक समानता सँ जँ एक वस्तुमे अनेक वस्तुक संशय होअय तँ ओतय सन्देह अलंकार होइत अछि ।

जेना - थिक देहक दिव्य छटाकी ? चमकाबथि सोनक भूषणकेँ ?
टिकुलि थिक की थिक तेसर आँखि सताबक हेतु युवजन केँ ?
हम की कहू ई चमकी थिक की ? की बन्है छथि ई हमरा मानेकेँ ?
निज केश बन्है छथि सुन्दरि की ? की बन्है छथि हमरा मनकेँ ?

अपह्नुति - जतय एक वस्तुकेँ निषेध कय ताहि स्थानपर आनक आरोप कयल जाय तँ ओ अपह्नुति अलंकार कहबैत अछि ।

जेना - नहि गजमुक्ता मणिक छवि, नहि मोतीक थिक हार -
भूप रमेश्वर सिंह उर शोभित सुरसरि धार ?

उत्प्रेक्षा- जतय उपमेयमे उपमानक संभावना कयल जाइछ ओतय उत्प्रेक्षा अलंकार होइत अछि ।

जेना - (i) आनन लोगुञ वचन बोलए हँसि
अमिञ बरिस जनि सरद पुनिम शशि ।

अतिशयोक्ति - उपमेय मे उपमानक अभेद आरोप करैत काल केवल उपमानक कथन कहल जाय तँ ओतय अतिशयोक्ति अलंकार होइत अछि। अतिशयोक्तिक अर्थ होइत अछि अतिशय उक्ति अर्थात कोनो बातकेँ बढ़ा चढ़ा केँ प्रस्तुत करब।

जेना- पल्लवराज चरणयुग शोभित
गति गजराजक भाने।
कनक केदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने।

दृष्टान्त - उपमेय आ उपमान जखन विभिन्न विम्ब-प्रतिबिंब जकाँ एक बुझि पड़ैछ ओतय द्रष्टान्त अलंकार होइत अछि।

जेना - के जाए श्रीयुत-रमेश नरेश-धाम
से की करैछ पुनि याचन आन ठाम
जे शम्भु नाम सुमिरै अछि एक बेरि
से की अबैछ पुनि माइक गर्भ फेरि।

एहि ठाम श्री रमेश नरेशक द्वार पर जाय फेर दोसर ठाम याचना नहि करब तथा शम्भुक नामक स्मरण सँ पुनः मायक गर्भमे नहि आयब ई भिन्न-भिन्न धर्म प्रतिबिंब जकाँ अछि अतएव एतय दृष्टान्त अलंकार अछि।

निदर्शन - जतय उपमेय आ उपमानमे एकरूपता आ एकता आरोपित कयल जाय ओतय निदर्शना अलंकार होइत अछि।

जेना - से छवि लाल, गुलबदन जे पाकल तिलकोर।
देखल से छवि आइ हम, सुमुखिक सुन्दर ठोर।

विभावना : बिना कारणो जतय कार्यक उत्पत्ति देखओल जाय आतेय विभावना अलंकार होइत अछि।

जेना - (i) अविरल नयन गरए जलधार, नव जल विन्दु सहय के पार।
(ii) बिनु पद चलइ, सुनइ बिनु काना, कर बिनु करम करई विधि नाना।

विशेषोक्ति - जाहि ठाम पूर्ण कारण रहितहुँ कार्य सम्पन्न नहि होअय ओतय विशेषोक्ति अलंकार होइत अछि।

जेना - अम्ब चरण भज जनिक मन, अपराधहु नहि रोष
खर्चहु कैने नहि धटै, जनिक दयामय कोष।

विषम - जतय दू असमान वस्तुक घटनाक वर्णन हो ओतय विषम अलंकार होइत अछि।

जेना - छाली चाटक एक दिन कैलक मूस विचार
गेल कड़ाहिक निकट की, धैलक ठोंठ विलाड़ ।

अर्थान्तरन्यास - जतय सामान्यक विशेष सँ आ विशेषक सामान्य सँ समर्थन रहय ओतय अर्थान्तरन्यास अलंकार होइत अछि ।

जेना - दस माने तँ पैघ छी नहि तौं सब सौं छोट ।
कौड़िक मोल हजार हो, उदाहरण अछि नोट ।

एकावली - जाहि ठाम एक कैं दोसर सँ, दोसर कैं तेसर सँ इत्यादि संबंध कथन हो ततय एकावली अलंकार होइत अछि ।

जेना - भूपर गिरि गिरि पर वृषभ वृष पर शिव धथि थीर
शोभित शिव सिर पर जटा तेहि पर सुरसरि नीर ।

अलंकारक पारस्परिक अन्तर

(i) **उपमा-रूपक** - उपमा अलंकार सँ सादृश्यक प्रधानता रहैत अछि रूपकमे अभेदक । उपमा मे सादृश्य वाच्य रहैत अछि रूपक मे व्यंग्य ।

(ii) **यमक-अनुप्रास** - अनुप्रास मे शब्द एवं अर्थ दुनूक आवृति रहैत अछि मुदा यमक मे मात्र शब्दक आवृत्ति रहैत अछि अर्थक नहि ।

(iii) **उपमा-उत्प्रेक्षा** - उपमामे उपमेय-उपमानक समता प्रतिपादित रहैत अछि तथा उत्प्रेक्षामे उपमेय मे उपमान सँ संभावना कयल जाइत अछि ।

(iv) **रूपक-अपह्नुति** - रूपकमे उपमेयमे उपमानक अभेद आरोप रहैत अछि मुदा अपह्नुतिमे उपमेयमे उपमानक निषेधरहित आरोप रहैत अछि ।

(v) **अपह्नुति-वक्रोक्ति** - अपह्नुतिमे कथनक अर्थ बदलि देल जाइत अछि किन्तु वक्रोक्तिमे दोसर व्यक्तिक कथन कें उनटि दोसर अर्थ कयल जाइत अछि ।

(vi) **सन्देह-भ्रांतिमान** - सन्देह मे दुइ वस्तुमे निश्चय नहि भ' पबैछ जे अमुक वस्तु अछि अथवा अमुक । जखन की भ्रान्तिमानमे दोसर वस्तु कें सर्वथा दोसर मानि लेल जाइत अछि ।

(vii) **रूपक-अतिशयोक्ति** :- रूपकमे उपमेय एवं उपमान दुनू शब्दत: कथन क' ओहिमे अभेदक प्रतिपादन रहैत अछि किन्तु अतिशयोक्ति

मे उपमेयकेँ नुका उपमानक संग ओकर अभेद स्थापित कयल जाइत अछि ।

(viii) **उत्प्रेक्षा-अतिशयोक्ति** :- अतिशयोक्तिमे उपमेयक कथन नहि मात्र उपमान कथित रहैत अछि जखन की उत्प्रेक्षामे उपमेयक कथन रहैत अछि आ ओहि संग उपमानक संभावना कयल जाइत अछि ।

(ix) **उत्प्रेक्षा-रूपक** :- सब उत्प्रेक्षामे उपमेय मे उपमानक संभावना रहैत अछि जखन की रूपकमे आरोप ।

(x) **उत्प्रेक्षा-सन्देह** :- सन्देहमे दुनू कोटिक वस्तु समान रूपसँ प्रतीति होइत अछि किन्तु उत्प्रेक्षामे उत्कट रूप सँ सम्भावित एक कोटिक ।

(xi) **समासोक्ति-अप्रस्तुतप्रशंसा** :- समासोक्ति मे प्रस्तुत वाच्य एवं अप्रस्तुत व्यंग्य रहैत अछि मुदा अप्रस्तुत प्रशंसामे अप्रस्तुत वाच्य एवं प्रस्तुत व्यंग्य रहैत अछि । दुनू अलंकार एक दोसराक विपरीत थिक ।

(xii) **विशेषोक्ति-विभावना** :- विशेषोक्ति मे कारण रहितहुँ कार्य नहि होइत अछि जखन की विभावना मे उपयुक्त कारण नहि रहितहुँ कार्य होइत अछि ।

(xiii) **काव्यलिंग-अर्थान्तरन्यास** :- काव्यलिंगमे वाक्यार्थ कारण सँ साकांक्ष रहैत अछि बिना कारण ओ उत्पन्न नहि होइत अछि । अर्थान्तरन्यासमे वाक्यांश निराकांक्ष रहैत अछि अर्थात बिना समर्थनोक ओ उत्पन्न भ' सकैत अछि ।



छन्द-विवेचन

छन्द :- छन्द थिक ओ काव्यात्मक रचना जाहि मे लय, तुक, ताल आदिक अनकूल वर्ण वा मात्राक विन्यास रहैत अछि ।

यति :- छन्दक उच्चारण करबाकाल उच्चारण सौन्दर्यक रक्षाक हेतु जे स्थान-स्थान पर विश्राम लेल जाइत अछि ओकरा यति, विराम वा विश्राम कहल जाइछ ।

वर्ण आ मात्रा :- भाषाक सब सँ छोट रूप वर्ण थिक जकर खंडन नहि कयल जा सकैछ आ ओहि वर्णक उच्चारणमे जे समय लगैत अछि ओकरा मात्रा कहल जाइत अछि ।

लय आ तुक :- स्वरक साम्य छन्दक प्रथम गुण थिक । एहि स्वर साम्य युक्त उच्चारण प्रवाह केँ गति वा लय कहल जाइछ । छन्दक प्रत्येक चरणक अंत मे जे एक सदृश स्वर युक्त वर्ण रहैत अछि ओहि वर्णक आवृति अर्थात वर्ण मैत्री केँ तुक कहल जाइत अछि ।

मैथिली साहित्यमे तीन प्रकारक छन्द प्रचलित अछि - (i) वार्णिक (ii) मात्रिक (iii) मुक्तवृत्त ।

जाहिठाम वर्णक अनुसार प्रत्येक चरणक निर्माण होइत अछि ओकरा वार्णिक छन्द कहल जाइछ । ई मुख्यत: दस प्रकारक होइत अछि - (1) अनुष्टुप (2) द्रुतविलम्बित (3) वंशस्थ (4) वसन्त तालिका (5) मालिनी (6) शिखरिणी (7) मदांक्रान्ता (8) कवित्त (9) सवैया (10)

जाहिठाम प्रत्येक चरणमे निश्चित मात्रा रहैत अछि ओकरा मात्रिक छन्द कहल जाइत अछि । एकर मुख्य 28 प्रकार अछि जाहिमे प्रमुख अछि - (i) चौपाई (ii) रोला (iii) दोहा (iv) सोरठा (v) कुंडलिया (vi) शृंगार (vii) हरिगीतिका आदि ।

मानवक मुक्तिक सदृश कविताक मुक्ति सेहो होइत अछि । मुक्त छन्दक प्रयोग आधुनिक कविताक विशेषता थिक ।

(i) **अनुष्टुप छन्द** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे आठ वर्ण रहैत अछि । छन्दक चारू चरणमे पाँचम वर्ण लघु आ छठम वर्ण गुरु होइत अछि ।

(ii) **द्रुतविलम्बित छन्द** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे एक नगण, दू टा भगण आ एकटा तगण क्रमश: रहैत अछि ।

(iii) **मालिनी** - मालिनी छन्दक प्रत्येक चरणमे दुइ टा नगण, एकटा मगण आ दुइटा यगण रहैत अछि ।

(iv) **मदाक्रान्ता** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे एकटा मगण, एकटा भगण, एकटा नगन, दुइ टा तगण आ दुई टा गुरु रहैत अछि ।

(v) **शिखरिणी** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे एकटा यगण, एकटा मगण, एकटा नगण, एकटा सगण एकटा भगण एकटा लघु तथा एकटा गुरु वर्ण क्रमशः रहैत अछि । छठम एवं एगारहम वर्णक पश्चात यति होइत अछि ।

(vi) **सवैया** - सवैया छन्दक प्रत्येक चरणमे 22 सँ 26 धरि वर्ण रहैत अछि ।

(vii) **चौपाई** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 16 मात्रा रहैत अछि ।

(viii) **शृंगार** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 16 मात्रा होइत अछि । अंतिम तीन टा मात्रा अनिवार्य रूपसँ गुरु लघु क्रममे रहैत अछि ।

(ix) **रोला** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 24 मात्रा होइत अछि ।

(x) **रूपमाला** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 25 मात्रा होइत अछि । एहि छन्दक तेसर, दसम एवं सत्रहम मात्रा अनिवार्यतः लघु होइत अछि । शृंगार एवं करुण रसक परिपाकक हेतु ई छन्द अत्यन्त समर्थ सिद्ध होइत अछि ।

(xi) **गीतिका** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 26 मात्रा होइत अछि ।

(xii) **हरिगीतिका** - एहि छन्दक प्रत्येक चरणमे 28टा मात्रा होइत अछि ।

(xiii) **दोहा** - ई अर्द्ध सममात्रिक छन्द थिक । एकर विषम चरणमे 13-13 आ समचरणमे 11-11 मात्रा रहैत अछि ।

(xiv) **सोरठा** - एहि छन्दक समचरणमे 11-11 मात्रा आ विषम चरणमे 13-13 मात्रा होइत अछि । ई दोहा छन्दक चरणक क्रमकेँ उनटि देने बनैत अछि । दोहा एवं सोरठाक विषम चरण मे एकटा अन्तर ई अछि जे सोरठाक विषम चरणमे अनुप्रास पाओल जाइत अछि ।

(xv) **कुण्डलियां** - ई दोहा एवं रोला (24 मात्रा) छन्दक मिश्रण सँ निर्मित होइत अछि । चरणक संख्या 6 होइत अछि । प्रायः प्रथम दू चरण 'दोहा' छन्दक अछि आ पश्चात चारि चरण रोला छन्दक ।



नायकक प्रकार

(i) **धीरोदात्त :-** धीरोदात्त नायक अत्यन्त गम्भीर स्वभाव रखनिहार, क्षमायुक्त, अपन मुँह सँ अपन प्रशंसा नहि कयनिहार, हर्ष-शोक आदि सँ अपन स्वभावकेँ अप्रभावित रखनिहार स्थिर प्रकृतिक एवं दृढ़व्रती होइत छथि ।

(ii) **धीरललित :-** धीरललित नायक निश्चित प्रकृतिक अत्यन्त कोमल स्वभाव रखनिहार तथा विभिन्न कलामे गहन अभिरूचि रखनिहार होइत छथि ।

(iii) **धीर प्रशान्त :-** धीर प्रशान्त नायक ब्राह्मणादि उच्चकुलक व्यक्ति होइत छथि । हिनकामे नायकक त्याग आदि गुण विशेष मात्रामे रहैत अछि ।

(iv) **धीरोद्धत वा धीरोद्धात :-** धीरोद्धात्त नायक मायावी, चपल, प्रचण्ड स्वभाव रखनिहार, घमण्डी, शूर, एवं आत्म प्रशंसक होइत छथि । जेना – रावण

नायिकाक प्रकार

(i) **मुग्धा नायिका :-** 'मुग्धा' ओहन नायिका केँ कहल जाइत अछि जनिकामे युवावस्थाक आगमन तँ भेल रहैत अछि मुदा ओ अत्यन्त लज्जाशील, मोनक धनी आ रति-क्रियाक प्रति उदासीन रहैत अछि ।

(ii) **मध्या नायिका :-** 'मध्या' ओहन नायिका होइत छथि जे रतिक्रियामे अत्यंत पारंगत, काम-भावनाक अत्यन्त प्रिय, प्रणयालाय मे अत्यन्त ढीठ एवं लज्जा भावनाक अभाव रहैत अछि ।

(iii) **प्रगल्भा :-** 'प्रगल्भा' नायिकामे अत्यन्त कामोन्माद यौवनक पूर्ण विकास, भाव भंगिमा देखयबामे निपुण आ रतिलज्जाक प्रति विरोध भाव रखैत अछि ।

1. **स्वकीया नायिका :-** स्वकीया नायिका ओ होइत छथि जे नायकक विवाहिता पत्नी रहैत छथि आ जिनकामे नम्रता, कुलीनता आ पातिव्रत्य रहैत अछि । स्वकीया नायिका तीन प्रकारक होइत अछि ।
   (i) मुग्धा (ii) मध्या (iii) प्रगल्भा

2. **परकीया नायिका :-** परकीया नायिका ओ कहबैत अछि जे अपन पति केँ छोड़ि कोनो दोसर नायकक संग अपन प्रेम संबंध रखैत अछि ।

3. **सामान्या नायिका :-** सामान्या नायिका साधारणत: वेश्या कें कहल जाइत अछि । एहि कोटिक नायिका मे नृत्य एवं संगीत, धनलोलुपता, आडम्बर आ दुर्जन व्यक्तिक संग रहबाक प्रवृत्ति रहैत अछि ।

4. **पद्मिनी नायिका :-** कमनीय मुख रखनिहारी कमलदलक सदृश कोमल होइत अछि । हिनक नेत्र कमल समान सुन्दर होइत अछि आ ई दुब्बरि, सुशीला, मृदुभाषिणी होइत छथि ।

5. **चित्रिणी नायिका :-** चित्रिणी नायिका तन्वंगी, आकरमे पैघ आ हिनक कटि क्षीण, पयोधर पुष्ट रहैत छनि संगहि प्रणयोपचारक अनुरागिनी होइत छथि ।

6. **शंखिनी नायिका :-** ई उपर्युक्त दुनू नायिकाक अपेक्षा हेय होइत छथि। ई खूब मोट वा पातर, नम्हर बाँहि, स्तन छोट रखनिहारी संगहि खूब क्रोध करयवाली होइत छथि ।

(iv) **हस्तिनी नायिका :-** ई सभमे निकृष्ट होइत छथि । हिनक आकार गोलमटोल, पैर मोट-मोट आँगुर सँ युक्त रहैत अछि । हिनक शरीर सँ गंध अबैत अछि आ ई विलास एवं व्यभिचारमे अनुराग रखनिहारी होइत छथि ।

काव्य रीति

आइ शैली वा 'style' सँ जाहि अर्थक बोध होइत अछि पहिने ओकरा, रीति कहल जाइत छल । आचार्य भरतमुनि 'रीति'क स्थान पर प्रगति शब्दक प्रयोग कयने छथि । आचार्य वामन 'रीति' कें काव्यक प्रधान लक्षण मानैत लिखने छथि 'रीतिरात्मा काव्यस्य' । आचार्य वामन रीतिक तीन भेद कयने छथि । (i) वैदर्भी (ii) गौड़ी (iii) पांचाली ।

माधुर्य व्यंजक शब्द सबसँ समन्वित समासरहित अथवा अत्यन्त छोट-छोट समास सँ युक्त ललित रचनाकें वैदर्भी रीति कहल जाइत अछि ।

ओजक प्रकाशक वर्णन सभ सँ संघटित औद्धात्यपूर्ण पर संघटना युक्त दीर्घ समासयुक्त एवं आडम्बर प्रधान रीति कें गौड़ी रीति कहल जाइत अछि।

गौड़ी आ वैदर्भी रीतिक मध्य शैली कें पांचाली रीति कहल जाइत अछि ।

काव्यक गुण

काव्यक तीन टा गुण होइत अछि । (i) माधुर्य (ii) ओज (iii) प्रसाद ।

(i) **माधुर्य :-** माधुर्य गुण ओ गुण होइछ जे चित्त कें आनन्द विभोर कऽ दैत अछि । एहि गुणक कारणे काव्य पढ़ऽ वा सुनऽ मे नीक लगैत अछि। एहन रचना मे टवर्गक प्रयोग नहि होइत अछि । यथासंभव समासविहीन पदक प्रयोग होइत अछि । शृंगार, करुण एवं शान्त रस मे ई गुण विशेष रूपें पाओल जाइत अछि ।

(ii) **ओजगुण :-** ओज गुण ओ गुण अछि जे चित्त मे तेज ओ स्फूर्तिक संचार करैत अछि । वीर, वीभत्स आ रौद्र रसक रचनामे ई विशेष रूप सँ पाओल जाइत अछि । दीर्घ समासयुक्त पदक रचना एहिमे रहैत अछि ।

(iii) **प्रसाद गुण :-** प्रसाद गुण ओ अछि जे काव्य कें पढ़ितहि अथवा सुनितहि ओकर अर्थ कें हृदयंगम बना दैत अछि । ई गुण सभ रचना एवं सभ पद्यमे विद्यमान रहैत अछि। सरल एवं सुबोध शब्दक प्रयोग होइत अछि । दीर्घ समासयुक्त शब्दक परिहार कयल जाइत अछि ।

काव्यक दोष

काव्य दोष तीन प्रकारक होइत अछि । (i) शब्द दोष (ii) अर्थ दोष (iii) रस दोष ।

शब्द दोष :- वाक्यार्थक बोध होयबामे प्रथमतः जे दोष प्रतीत होइत अछि ओकरा शब्द दोष कहल जाइत अछि ।

अर्थ दोष :- जतय पदक संयोजन ठीक रहय मुदा अभिप्रेत, अर्थक अभिव्यक्ति दूषित भ' जाय ओकरा अर्थ दोष कहल जाइत अछि ।

रस दोष :- जतय 'रस' स्थायी भाव आ व्यभिचारी भावक पुष्टि ओहि सँ संबंधित भाव वर्णन नहि भऽ ओकर शब्दतः कथन द्वारा होइत अछि - ओकरा रस दोष कहल जाइत अछि ।



दोसर-अध्याय

भाषा आ व्याकरण

भाषा - जाहि माध्यम सँ लोक अपन विचार आ भावकेँ, बाजि कऽ अथवा लिखि कऽ, व्यक्त करैत अछि तथा सुननिहार आ पढ़निहार ओहि विचार आ भावकेँ ओहि रूपमे बुझैत अछि, जाहि रूपमे वक्ता तथा लेखक ओहिमे व्यक्त कयने रहैत छथि तँ ओ भाषा कहबैत अछि । ई -भाष' धातु सँ बनल अछि । भाषाक दू रूप होइत अछि - मौखिक आ लिखित ।

व्याकरण - व्याकरण ओ शास्त्र थिक जाहि सँ भाषा अनुशासित होइत अछि । अर्थात जाहि शास्त्र केँ पढ़ला सँ शुद्ध-शुद्ध बजबा, लिखबा आ पढ़बाक ज्ञान होइत अछि व्याकरण कहबैत अछि ।

व्याकरणक तीन अंग होइत अछि - वर्ण, शब्द आ वाक्य । एकरा एकाइ सेहो कहल जाइत अछि । लोक जे किछु बजैत अछि से वाक्य रूपमे । वाक्य मे शब्द रहैत अछि आ शब्द वर्णक मेल सँ बनैत अछि ।

वर्ण - वर्ण ओ मूल ध्वनि थिक जकर खंडन नंहि भऽ सकैछ । एकर दोसर नाम अक्षर थिक ।

वर्णमाला - वर्णक श्रृंखलाबद्ध रूपकेँ वर्णमाला कहल जाइछ । देवनागरी वर्णमालामे 57 वर्ण अछि मुदा मैथिलीमे 49 वर्ण प्रयोग होइत अछि । **ऋ** आ **लृक** प्रयोग नहि होइत अछि । ई वर्ण सभ दू भाग मे विभक्त अछि-
(1) स्वर (2) व्यंजन

स्वर वर्ण - जाहि वर्णक उच्चारण स्वतः अर्थात् बिना कोनो आन वर्णक सहयोग सँ होइत अछि ओ स्वर वर्ण कहबैत अछि । एकर कुल संख्या तेरह (13) अछि । स्वर वर्णक तीन भेद होइत अछि ।

(1) ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ - 1 मात्रा
(2) दीर्घ - आ, ई, ऊ, ऐ, औ - 2 मात्रा
(3) प्लुत - - 3 मात्रा

सभ स्वर प्लुत होइत अछि । ककरो बजयबामे एकर प्रयोग कयल जाइत अछि । जेना - सीताराम ऽऽऽ ! एम्हर आउ । अनुस्वार आ विसर्ग स्वर वर्णक रूपमे परिगणित अछि ।

व्यंजन वर्ण :- जाहि वर्णक उच्चारण स्वर वर्णक सहायता सँ होइत अछि ओ व्यंजन वर्ण कहबैत अछि । एकर कुल संख्या 33 अछि । ई तीन भाग मे विभक्त अछि -

स्पर्श, अन्तस्थ आ उष्म । कुल स्पर्श वर्ण पाँच वर्ग मे विभक्त अछि ।

(1) स्पर्श - कवर्ग, (क, ख, ग, घ, ङ)

चवर्ग - (च, छ, ज, झ, म)

टवर्ग - (ट, ठ, ड, ढ, ण)

तवर्ग - (त, थ, द, ध, न)

पवर्ग - प, फ, ब, भ, म

(2) अन्तस्थ - य, र, ल, व

(3) उष्म - श, ष, स, ह ।

संयुक्ताक्षर - क्ष (क, + ष), त्र (त, + र), ज्ञ (ज, + ञ)

मात्रा :- वर्णक उच्चारणमे जे समय लगैत अछि ओ मात्रा कहबैत अछि ।

लिपि :- उच्चारित ध्वनि संकेतक लिखित रूपकेँ लिपि कहल जाइत अछि । मैथिलीक लिपि तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर कहबैत अछि मुदा आब मैथिली देवनागरी लिपि मे लिखल जाइत अछि ।

उच्चारण स्थान

वर्ण	**- उच्चारण स्थान**
अ, आ, क, ख, ग, ध, ङ, ह आ विसर्ग (:)	- कंठ
इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य आ श	- तालु
ऋ, ट, ढ, ड, ठ, ण र, ष	- मुर्द्धा
त, थ, द, ध, न, ल, स	- दाँत
उ, ऊ, प, फ, ब, भ, आ म	- ओष्ठ
ए आ ऐ	- कण्ठ आ तालु
ओ आ औ	- कण्ठ आ ओष्ठ
ब	- दाँत आ ओष्ठ
अनुस्वार (ं)	- नाक

ङ, भ, ण, न आ म अनुनासिक वर्ण थिक । एकर उच्चारण मे अपन वर्गक निर्धारित उच्चारण स्थानक संग नाकोक सहयोग रहैत अछि ।

अनुस्वार (.) आ विसर्ग (:) ने स्वर मे गनाइत अछि ने व्यंजनमे। एकरा अयोगवाह कहल जाइत अछि ।

शब्द

सार्थक ध्वनि आ वर्णक समूह शब्द कहबैत अछि ।

(i) **अर्थक दृष्टि** सँ शब्दक दू भेद होइत अछि - सार्थक आ निरर्थक। व्याकरणमे सार्थक शब्द पर विचार कयल जाइत अछि ।

(ii) उत्पत्तिक विचार सँ शब्दक चारि भेद होइत अछि -तत्सम, तदभव, देशज आ विदेशज ।

(क) **तत्सम** - जे संस्कृतक शब्द मैथिली मे मूल रूपमे प्रयुक्त होइत अछि ओकरा तत्सम शब्द कहल जाइत अछि ।

जेना - छात्र, विद्यालय, संस्कार, सज्जन ।

(ख) **तद्भव** -जे शब्द संस्कृतक मूल रूप सँ किछु हटि कऽ प्रयुक्त होइत अछि तद्भव कहल जाइत अछि ।

जेना - खेत (क्षेत्र), पाथर (प्रस्तर) पथार (प्रसार) आदि ।

(ग) **देशज** - जे शब्द नहि तँ संस्कृत सँ आयल अछि आ नहि आन देशक भाषासँ अपितु जे अपनहि देशमे उत्पन्न भेल अछि देशज कहबैत अछि ।

जेना - बताह, बुड़िबक, लागनि, फुनगी आदि ।

(घ) **विदेशज**- जे शब्द विदेशी भाषा सँ आयल अछि विदेशज कहबैत अछि । जेना - पुलिस, मशीन, आलमारी (अंग्रेजी सँ), गुलाब, बाग (फारसीसँ) आलु, पटरी, (पुर्तगाली सँ)

(iii) **व्युत्पतिक दृष्टि** सँ शब्दक तीन भेद होइत अछि । - रूढ़ि, यौगिक, योगरूढ़ि ।

(क) **रूढ़ि :**- जाहि शब्दक खण्ड नहि होइछ, एक निश्चित अर्थ मे रूढि रहैत अछि । जेना - लाल, घर, आम ।

(ख) **यौगिक** - यौगिक ओ शब्द थीक जकर खण्ड कयला पर प्रत्येक खण्ड सँ अर्थ बहराइत अछि । जेना - विद्यालय एकर खण्ड भेल विद्या+आलय । ई दुनू खण्ड सार्थक अछि ।

(ग) **योगरूढि** - ओ शब्द जकर प्रत्येक खण्ड सार्थक होइत अछि मुदा ओ सामान्य अर्थक स्थानमे अपन विशेष अर्थक बोधक होइत अछि।

जेना - लम्बोदर। एकर खण्ड भेल लम्बा+उदर। ई दुनू खण्ड सार्थक अछि मुदा एकर अर्थ होइत अछि - गणेश, लम्बा उदर बला नहि।

(iv) **प्रयोग दृष्टि** सँ शब्दक दू भेद होइत अछि - विकारी आ अविकारी।

(क) **विकारी** - जाहि शब्दक रूप लिंग, वचन, पुरुष आ कारकक अनुसार बदलैत अछि ओकरा विकारी शब्द कहल जाइत अछि। ई चारि प्रकारक होइत अछि - संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ विशेषण।

(ख) **अविकारी** - जाहि शब्दक रूप सदिखन एके रहैत अछि - अविकारी शब्द कहबैत अछि। अविकारी शब्द थिक अव्यय। जेना - जेना, तेना, एखन, जहिया आदि।

संज्ञा

कोनो व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदिक नाम केँ संज्ञा कहल जाइत अछि। जेना - पाथर, मनुष, गोविन्द, घैल, सुन्दर आदि।

संज्ञाक पाँच भेद होइत अछि - जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समूहवाहक आ द्रव्यवाचक संज्ञा।

(1) **व्यक्तिवाचक** - जाहि संज्ञा सँ कोनो खास व्यक्ति वा वस्तुक बोध होइत अछि ओकरा व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल जाइछ। जेना - राम, पटना, दरभंगा, विसफी, विद्यापति आदि।

(2) **जातिवाचक** -जाहि संज्ञा सँ जाति भरिक बोध होअय ओकरा जातिवाचक संज्ञा कहल जाइछ।

जेना - मनुख, गाय, गाम, पोथी, देश, जंगल, नदी।

(3) **भाववाचक** - जाहि संज्ञा शब्द सँ व्यक्ति, वस्तु आ स्थानक बोध होइत अछि ओ भाववाचक संज्ञा कहबैत अछि। जेना- नेनपन, लाली, सुन्दरता, घबराहट आदि।

(4) **समूहवाचक** - जाहि संज्ञा शब्द सँ कोनो व्यक्ति वा वस्तुक समूहक ज्ञान होइत अछि ओ समूहवाचक संज्ञा कहल जाइत अछि। जेना- झुण्ड, गाछी, झब्बा, सभा, घौर आदि।

(5) **द्रव्यवाचक** -जाहि संज्ञा शब्द सँ ओहि वस्तुक बोध होइत अछि जकरा नापल वा जोखल जाय ओ द्रव्यवाचक संज्ञा भेल। जेना - दूध, तेल, चाउर, दालि, पानि, चीनी, दही आदि।

कारक

क्रियाक उत्पत्ति मे जे सहायक हो ओ थिक कारक । दोसर शब्दमे वाक्य मे जे क्रियाक संग आन पदक संबंध बताबय से थिक कारक ।

जेना - रामू पोथी पढ़ैत अछि । एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक उत्पत्ति मे 'रामू' ओ 'पोथी' सहायक अछि । एहि दुनूमे राम क्रिया करयवला अछि ओ पोथी पर क्रियाक प्रभाव पड़ि रहल अछि । एहि दुनू पदक अभावमे 'पढ़ैत अछि' क्रिया नहि संभव अछि । कारकक आठ भेद होइत अछि - कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, आपादान, सम्बोधन, अधिकरण आ सम्बोधनक कारक ।

(1) **कर्त्ता कारक** - जे काज अर्थात क्रियाक सम्पादन करय से अछि कर्त्ता, जेना :- श्याम आम खाइत अछि । 'एतय' खाइत अछि 'क्रियाक कयनिहार अछि श्याम तेँ एहि वाक्यक कर्त्ता भेलाह श्याम । मैथिली भाषामे कर्त्ता कारक कोनो चेन्ह नहि होइत अछि । ओ प्रयोग सँ चिन्हाइत अछि ।

(2) **कर्मकारक** - क्रियाक प्रभाव जाहि पद पर पड़य से थीक कर्म, जेना - श्याम आम खाइत अछि । एहि वाक्यमे खाइत अछि क्रिया सँ 'आम' प्रभावित भऽ रहल अछि । तेँ एहि वाक्यक कर्म भेल 'आम'। कर्म कारकक चेन्ह अछि - केँ, के, आ काँ । मुदा अप्राणी वाचक शब्दमे कर्मकारक चेन्हक प्रयोग नहि होइत अछि ।

(3) **करण कारक** - वाक्य जे पद क्रियाक सम्पादन (करबा)मे सबसँ बेसी सहायक होइत अछि से भेल करण कारक । जेना – रीशु कलम सँ लिखैत अछि । एहि वाक्य मे 'कलम' पदक अभावमे लिखैत अछि क्रिया नहि भऽ सकैत अछि । तेँ कलम एहि वाक्यक करण भेल । एकर चिन्ह अछि सँ ।

(4) **सम्प्रदान कारक** - जकरा लेल क्रिया कयल जाइत अछि से सम्प्रदान कारक होइत अछि । जेना - सफलताक लेल छात्र मेहनति कऽ रहल छथि । एहि वाक्यमे सफलता सम्प्रदान कारक थिक । एकर चेन्ह अछि - केँ, लेल, हेतु ।

(5) **अपादान कारक** - जकरा सँ सम्बन्ध टूटय, कोनो वस्तु दूर होअय से भेल - अपादान कारक । जेना - गाछ सँ पात खसैत अछि । एहि ठाम गाछ अपादान कारक थिक । एकर चेन्ह अछि - सँ ।

(6) **सम्बन्ध कारक** - जाहि शब्द सँ कर्त्ता अथवा कोनो शब्द सँ सम्बन्धक बोध होइछ ओ सम्बन्ध कारक कहबैत अछि । जेना - मिथिलाक राजा जनक छलाह । एहि वाक्यमे मिथिला संबंध कारक थिक । एकर चेन्ह अछि क आ केर ।

(7) **अधिकरण कारक** - जे शब्द क्रियाक आधार होइत अछि से अधिकरण कारक कहबैत अछि । जेना- छात्र विद्यालय मे पढ़ैत अछि। वाक्य मे 'विद्यालय' अधिकरण कारक थिक । एकर चेन्ह अछि - मे, पर, माँझ, मध्य, हि इत्यादि ।

(8) **सम्बोधनकारक** - जाहि शब्दकेँ क्रियाक लेल सम्बोधित कयल जाय ओ सम्बोधन कारक थिक । जेना-हे छात्र ! अहाँ मोन सँ पढू । एहि वाक्यमे छात्र संबोधन कारक भेल ।

एहन वाक्य जाहिमे आठो कारक प्रयोग भेल अछि - "हे गोविन्द ! दशरथक पुत्र राम जंगल सँ आबि कऽ सीताक लेल जनकपुरमे हाथ सँ धनुष तोड़लनि ।

क्रिया

जाहि शब्द सँ कोनो काजक होयबा अथवा करबाक बोध होइत अछि ओकरा क्रिया कहल जाइत अछि । जेना - श्याम पढ़ैत अछि । वाक्य मे 'पढ़ैत' शब्द सँ पढ़ब काज होयबाक बोध होइत अछि तेँ ई क्रिया अछि ।

साधारणतः क्रियाक दू भेद होइत अछि - अकर्मक क्रिया आ सकर्मक क्रिया ।

(1) **अकर्मक क्रिया** - जाहि क्रियाक फल कर्त्ता पर पड़य से अकर्मक क्रिया कहबैत अछि । जेना - श्याम हँसैछ । राधा गबैत अछि । नेना कानैत अछि । सृष्टि पढ़ैत अछि ।

(2) **सकर्मक क्रिया** - जाहि क्रियाक फल कर्त्ता पर नहि पड़ि आन कोनो संज्ञा पर पड़य से सकर्मक क्रिया होइत अछि । जेना - रीशु पत्र लिखलनि । एतय लिखलनि क्रियाक फल पत्र पर पड़ैत अछि तेँ लिखलनि सकर्मक क्रिया अछि । ओना क्रियाक विशेष भेद-आठ अछि । (i) **विधि क्रिया**-एहि सँ विनय अथवा आज्ञाक बोध होइत अछि । जेना-आयल जाय, बैसू (ii) **कामनात्मक क्रिया**-एहि सँ कामना व्यक्त होइत अछि । जेना-अहाँ दीर्घायु होउ । (iii) **प्रेरणार्थक क्रिया**-एहि सँ आन लोक केँ क्रिया करबाक लेल प्रेरित

कयल जाइत अछि । जेना-शिक्षक छात्रसँ पाठ पढ़बाबैत छथि । (iv) **पूर्वकालिक क्रिया**-एहिमे एकहि वाक्यमे एक क्रियाक बाद दोसर क्रिया होयबाक बोध होइत अछि । जेना-मोहन नहाकऽ खाइत अछि । (v) **संयुक्त क्रिया**-एहि मे दू अथवा दू सँ अधिक क्रिया मिलि कऽ एकहि अर्थक बोध करबैत अछि । जेना-अहाँ पोथी पढ़ि लेब । (vi) **नामधातु** - संज्ञा सँ 'औने' 'एसने' आदि प्रत्यय लागि कऽ जे क्रिया बनैत अछि ओकरा नामधातु कहल जाइछ । जेना-मोहन हमर पोथी हथिऔने गेलाह ।

(vii) **मुख्य क्रिया** - जे मुख्य रूपसँ क्रिया व्यापारक बोध कराबय से भेल मुख्य क्रिया (viii) **सहायक क्रिया** - ई क्रिया वाक्यक मुख्य क्रियाक अर्थकेँ स्पष्ट करैत अछि । एहि सँ क्रियाक भूत, वर्त्तमान आ भविष्यक बोध होइत अछि । जेना - श्याम गीत गाबि रहल अछि ।

सन्धि

दू वा दू सँ अधिक वर्ण परस्पर मिलि जखन एक वर्ण बनि जाइत अछि तँ ओकरा संधि कहल जाइत अछि । अर्थात वर्णक मेल सँ जे विकार उत्पन्न होइत छैक तँ ओ संधि कहबैत अछि । जेना-नव+अन्न = नवान्न दिक्+अन्त=दिगन्त, दुः + गति = दुर्गति

दिनेक, आधेक, गोटेक आदि किछु पद केँ छोड़ि मैथिलीमे सन्धि नहि होइत अछि । एकरा अपवाद कहल जा सकैत अछि । मुदा मैथिली मे तत्सम शब्दक प्रयोग होइत अछि । मैथिलीमे जाहि तत्समक प्रयोग होइत अछि प्रायः ओहि सभमे संधि होइते अछि जेना विद्यालय, उदयाचल, परिच्छेद, षडानन, महेश आदि ।

वर्णक मेल सँ संधि होइत अछि । वर्ण तीन प्रकारक होइत अछि - स्वर, व्यंजन आ विसर्ग । तेँ सन्धियोक यैह तीन टा भेद अछि ।

(1) **स्वर सन्धि** - स्वर वर्णक संग स्वर वर्णक मेल सँ जे विकार उत्पन्न होइत अछि ओ स्वर संधि होइत अछि । स्वर संधिक पाँच भेद होइत अछि । दीर्घ, गुण, यण, वृद्धि आ अयादि ।

(क) **दीर्घ संधि** - आ, ई, ऊ तथा ऋ दीर्घ स्वर अछि । हस्व ह्रस्व, ह्रस्व दीर्घ, दीर्घ ह्रस्व अथवा दीर्घ दीर्घक मेल भेला पर दीर्घ होइत अछि । अर्थात जँ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, आ, ऋ, ऋक आगाँ समान स्वर आबय तँ क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ भऽ जाइत अछि ।

जेना - दिन+अन्त = दिनन्त, विद्या+आलय=विद्यालय रवि+इन्द्र = रवीन्द्र, लघु+उर्मि = लघूर्मि ।

(ख) **गुण सन्धि** - ए, ओ तथा अकेँ गुण कहल जाइत अछि । एहिमे जँ 'अ' अथवा 'आ'क बाद 'इ' अथवा 'इ' रहय तँ 'ए', 'उ', अथवा 'ऊ' रहय तँ 'ओ' तथा ऋ, अथवा ऋ आबय तँ 'अर' भऽ जाइत अछि ।

जेना - अमर+इन्द्र=अमरेन्द्र, गण+ईश = गणेश, महा+इन्द्र = महेन्द्र, महा+उर्मि = महोंमि, देव+ऋषि = देवर्षि, सूर्य+उदय = सूर्यादय, महा+ऋषि = महर्षि आदि ।

(ग) **यण संधि** - जँ इ, ई, उ, ऊ, अथवा ऋक आगाँ विषम (असमान) स्वर आबय तँ इ/ई क य, उ/ऊ क व, आ ऋ क र, भऽ जाइत अछि । जेना -

उ+अ = य, यदि + अपि = यद्यपि

इ+उ = यु = अभि + उदय = अभ्युदय

उ + अ = व - अनु+अय = अन्वय

उ + ए = बे - अनु+एषण = अन्वेषण

उ+आ =वा - सु+ आगत = स्वागत

ऊ + आ = वा - भू+आदि = भ्वादि

ऋ+आ = रा - मातृ + आदेश = मात्रादेश

ऋ + इ = रि - मातृ + इका = मात्रिका

(घ) **वृद्धि संधि** - 'आ', 'ऐ' तथा 'औ' वृद्धि कहबैत अछि ।
जतय 'अ' अथवा 'आ' सँ 'ए' अथवा 'ऐ' मिलिकंऽ 'ऐ' तथा 'ओ' अथवा 'औ' मिलिकऽ औ बनि जाइत अछि ओतय वृद्धि संधि होइत अछि । जेना - अ+ए/ऐ= ऐ-एक+एक=एकैक, मत+ऐक्य = मतैक्य
अ+ओ/औ=औ - परम+ओषधि=परमौषधि कुम्हड़+औड़ी = कुम्हड़ौडी
आ+ओ/औ=औ - महा+औचित्य = महौचित्य, महा+औदार्य = महौदार्य

(ङ) **अयादि संधि** - जँ 'ए' 'ऐ' 'ओ' अथवा औ'क आगाँ कोनो भिन्न स्वर आबय तँ 'ए'क 'अय', 'ऐ' क' 'अय' 'ओ' 'क' 'अव' तथा 'औ' 'क' आव' भऽ जाइत अछि।

जेना-ए+अ =अय-ने+अन = नयन

ऐ+अ = आय - नै+अक = नायक

ओ + अ = अव –पो+अन = पवन

ओ + इ = अवि – पो + इत्र = पवित्र

औ + अ = आव = पौ + अक = पावक

औ + उ = आवु – भौ + उक = भावुक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन वर्णक संग व्यंजन अथवा स्वर वर्णक मेल सँ जे विकार उत्पन्न होइत अछि तँ व्यंजन संधि होइत अछि ।

एकर मुख्य नियम निम्न अछि –

(1) वर्णक पहिल अक्षर (क, च, ट, त, प)क आगाँ कोनो वर्णक तेसर, चारिम वर्ण अथवा कोनो स्वर वर्ण अथवा थ, र, ल, व रहय तेँ क–ग्, च–ज, ट, – ड, त, – द, तथा प–ब भऽ जाइत अछि ।
(i) दिक्+अम्बर = दिगम्बर (ii) अच्+अन्त=अजन्त षट+दर्शन=षड, दर्शन, जगत+आत्मा = जगदात्मा कृत+अन्त=कृदन्त, सत्+याचना = सद्याचना

(2) वर्गक पहिल वर्ण (क, च, ट, त, प)क आगाँ जँ 'न' अथवा 'म' आबय तँ पहिल वर्ण अपन पाँचम वर्ण मे बदलि जाइत अछि ।
जेना – दिक्+नाग = दिङनाव, बाक्+मय = बाङमय, षट+मार्ग=षण्मार्ग, जगत्+नाथ = जगन्नाथ, उत्+नति=उन्नति, चित्+मय=चिन्मय ।

(3) 'म'क आगाँ जँ कोनो व्यंजन रहय तँ 'म'क अनुस्वार (ं) भऽ जाइत अछि । मुदा जँ ओ व्यंजन कोनो वर्गक होअय तँ 'म'क अनुस्वार (;) अथवा ओहि वर्गक पाँचम वर्णहु मे बदलि जाइत अछि । जेना- अहम्+कार = अहंकार/अहङ्कार, शम्+कर = शंकर/शङ्कर, सम्+गम=संगम/सङ्गक, किम्+चित = किंचित / किञ्चित ।

(4) 'त'क आगाँ जँ च, अथवा, छ, आबय तँ 'त'क 'च' अथवा 'ज' अथवा झ आबय तँ 'त'क 'ज' 'ट' अथवा 'ठ' आबय तँ 'त'क 'ट' 'उ' अथवा 'ठ' आबय तँ 'त' 'ल' आबय तँ 'त'क 'ल' 'श' आबय तँ 'ल'क 'च' आ 'श' क 'छ' तथा 'ह' आबय तँ 'त'क 'द' तथा 'ह'क 'ध' भऽ जाइत अछि । जेना – सत्+चरित्र=सच्चरित्र, उत–चारण =उच्चारण, उत+छिन्न= उच्छिन्न, महत+छिद्र=महच्छिद्र, उत+लंघन = उल्लंघन, तत्–हित = तद्धित ।

(5) 'त'क आगाँ जँ कोनो स्वर वर्ण अथवा, ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र अथवा 'व' आबय तँ 'त'क स्थान पर 'ट' भऽ जाइत अछि । जेना - जगत्+आनन्द = जगदानन्द जगत+ईश=जगदीश तत्+एव = तदैव, महत+औषधि = महदौषधि, उत्+गम=उद्गम, तत्+रूप = तद्रूप ।

(6) ऋ, र अथवा 'ष'क आगाँ न आबय अथवा एहि मध्य कोनो स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग य, व, ह सेहो आबि जाय तैयो 'न' क 'ण' भऽ जाइत अछि । जेना-भूष+अन=भूषण राम+अयन=रामायण, परि+नाम= परिणाम, प्र+मान=प्रमाण, 'चन्द्र+अयन=चन्द्रायण ।

(7) जँ कोनो शब्दक अन्तमे 'अ' अथवा, 'आ' केँ छोड़ि कोनो स्वर वर्ण रहय आ ओकरा आगाँ 'स' आबय तँ 'स'क 'ष' भऽ जाइत अछि । जँ 'स्थ' आबय तँ 'स्थ'क 'ष्ठ' भऽ जाइत अछि । जेना-सु+समा= सुषमा, अभि+सेक=अभिषेक, वि+साद=विषाद, युधि+स्थिर= युधिष्ठिर ।

विसर्ग संधि

विसर्ग (:)क संग स्वर अथवा व्यंजन वर्णक मेल सँ जँ विकार उत्पन्न होइय तँ ओ विसर्ग सन्धि होइत अछि ।

जेना-नि:+मल=निर्मल, नि:+चल=निश्चल । नि:+तार=निस्तार ।

संधि भेला पर विसर्ग (:) पाँच रूप धारण करैत अछि - स्, र, ओ एवं लोप तथा विसर्ग (:) यथावत, सेहो रहि जाइत अछि ।

(1) **विसर्गक 'स' रूप :-** विसर्गक आगाँ 'च' अथवा 'छ' रहय तँ विसर्गक श, 'ट' अथक 'ढ' रहय तँ विसर्गक 'ष' आ 'त' अथवा 'थ' रहय तँ विसर्गक 'स' भऽ जाइत अछि । जेना- नि:+चय = निश्चय, नि:+तार = निस्तार मन: + ताप = मनस्ताप, दु:+थल = दुस्थल ।

(ii) विसर्गक पूर्व 'इ' अथवा 'उ' रहय आ बादमे क, ख, प, अथवा क, रहय तऽ विसर्गक 'ष' भऽ जाइत अछि । जेना - नि:+कपट = निष्कपट, दु:+कर्म=दुष्कर्म, नि:+पाप = निष्पाप, दु:+प्रवृति=दुष्प्रवृति, नि:+फल=निष्फल

(2) **विसर्गक 'र' रूप :-** विसर्गक आगाँ पाछाँ स्वर वर्ण रहय तऽ विसर्गक 'र' भऽ जाइत अछि ।

जेना :- पुन:+अवलोकन = पुनरावलोकन नि:+आकार=निराकार, पुन:: उक्ति = पुनरूक्ति, पुन:+ एव = पुनरेव

(3) **विसर्गक 'ओ' रूप :-** विसर्गक पहिने 'अ' रहय आ बादमे वर्गक

तेसर, चारिम, पाँचम अथवा य, र, ल, व आ ह मे सँ कोनो आबय तँ ओ विसर्गक 'ओ' भऽ जाइत अछि । जेना- यशः+दा = यशोदा, मनः+ज=मनोज, पयः+धर=पयोधर मनः+भाव =मनोभाव

(ii) विसर्गक आगाँ पाछाँ 'अ' रहय तऽ विसर्गक पछिला अ आ विसर्ग मिलिकऽ 'ओ' बनि जाइत अछि तथा आगाँ वाला 'अ' केर लोप भऽ जाइत अछि ।

जेना - मनः+अनुकूल=मनोनुकूल, मनः+अभिलाषा=मनोभिलाषा विसर्गक लोप :- (i) विसर्गक पहिने कोनो हस्व स्वर रहय आ पाछाँ 'र' आबय तऽ विसर्गक लोप भऽ जाइत अछि आ विसर्गक पहिला हस्वस्वर दीर्घस्वर भऽ जाइत अछि । जेना- निः+रोग=निरोग, निः+रस=नीरस निः+रव=नीरव, पुनः+ रमण=पुनारमण ।

(ii) विसर्गक पूर्व 'अ' आ बादमे 'अ' केँ छोड़ि कऽ कोनो स्वर वर्ण रहय तऽ विसर्गक लोप भऽ जाइत अछि । जेना-अतः+एव=अतएव

विसर्गक विसर्गे रहब-(1) विसर्गक पूर्व 'अ' अथवा 'आ' रहय आ बादमे क, ख, फ रहय तऽ विसर्गक विसर्गे रहि जाइत अछि । जेना-प्रातः+काल =प्रातःकाल रजः+कण = रजः कण, पयः+पान=पयःपान किछु शब्दमे विसर्गक 'स' सेहो भऽ जाइत अछि ।

जेना - नमः+कार =नमस्कार, पुनः+कार=पुरस्कार भाः+कर=भास्कर

समास

जखन दू वा दू सँ अधिक पद अपन-अपन विभक्ति चेन्हकेँ छोड़ि आपसमे मिलि एकटा नव पद बनैत अछि तखन पदक ई मिलब समास कहबैत अछि । समासक अर्थ अछि संक्षेपण । एहि सँ बनल शब्दकेँ सामासिक वा समस्त पद कहल जाइत अछि ।

समासक छओ भेद अछि - तत्पुरूष, नञ, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व आ बहुब्रीहि ।

1. **तत्पुरूष :** जाहि समस्त पदमे उत्तर पदक प्रधानता रहैत अछि, ओ भेल तत्पुरूष समास । जेना-पनिबट, पानिक बाट । एहि मे बाटक प्रधानता अछि पानि गौण अछि । तमघैल, मुँह जोड़, गठजोड़ आदिक मृगराज, कर्मवीर आदि ।

2. **नञ समास :** अभाव अथवा निषेधक अर्थमे जे शब्दक पूर्व जँ 'अ' अथवा 'अन' लगैत अछि तँ ओ नञ समास होइत अछि । जेना-अनेक.

न एक अद्वितीय न द्वितीय अनचिन्हार, अनहोनी, अनर्थ, असम्भंव अनमेल आदि ।

3. **कर्मधारय** : विशेषण अथवा विशेष्यक समास कर्मधारय कहबैत अछि । एहिमे दुनू पद (विशेषण आ विशेष्य) एकहि विभक्तिमे रहैत अछि तेँ एकरा समानाधिकरण सेहो कहल जाइत अछि । जेना-आन दिन-अनदिना सब दिन=सबदिना, पीत अम्बर = पीताम्बर, नीलकमल=घन सदृश श्याम घनश्याम ।

4. **द्विगु** - जाहि समासक पहिल पद संख्यावाचक रहैत अछि ओ भेल द्विगु समास जेना-चारिबाट = चौबट्टी, सतघरा, पंचभैया, छमसिया ।

5. **द्वन्द्व** - जाहि समासमे दुनू पद समान रूप सँ प्रधान हो विशेषण विशेष्यक भाव नहि रहय से द्वन्द्व समास होइत अछि । जेना-आगि पानि दालिभात, भायबहिन, पानिपाथर, लोकवेद आदि ।

6. **बहुब्रीहि** : जाहि समासमे दूनूमे सँ कोनो प्रद प्रधान नहि रहैत अछि अपितु अन्य पद प्रधान होइत अछि से थिक बहुब्रीहि समास । जेना-लम्बोदर, गजानन, अधमरू, हथटुट्टा, नकपिच्चा आदि ।

संस्कृतमे 'अव्ययीभाव' समास सेहो अछि, मुदा मैथिलीमे एकर उदाहरण मात्र तत्सम शब्दमे भेटैत अछि । जेना-यशशक्ति, अनुरूप, अनुरक्षण (अनुखन) ।

उपसर्ग

जे शब्द अथवा धातु (क्रियाक मूलरूप)क पूर्व जुटि ओकर अर्थमे परिवर्त्तन करय, ओकरा उपसर्ग कहल जाइत अछि । शब्द निर्माण मे उपसर्गक बड़ पैघ महत्व अछि । जेना-अधर्म, अतिशय, अधिकारी, अवाक, अनुगमन, निवास, भरिपेट आदि ।

प्रत्यय

जे शब्द अथवा धातुक अन्तमे जुटि ओकर अर्थ मे परिवर्त्तन करय ओकरा प्रत्यय कहल जाइत अछि ।

जेना - देखौआ, अक-बैसक, अल-पढ़ल, लिखल, बेचल ।

कृदन्त - धातु सँ जे प्रत्यय लगैत अछि ओकरा कृत प्रत्यय कहल जाइत अछि आ एहि प्रत्यय सँ बनल शब्द कृदन्त कहबैत अछि । जेना-अयनिहार, खयनिहार, लागनि, चालनि ।

तद्धित – तद्धित प्रत्यय नाम अर्थात संज्ञा सँ लगैत अछि । अर्थात जे संज्ञाक अन्तमे लागि ओकर अर्थमे परिवर्त्तन करैत अछि तद्धित कहबैत अछि । जेना–तेहन, एम्हर, जतय, चारिम, एकसर आदि ।

ध्वनि परिवर्त्तनक कारण

ध्वनि परिवर्त्तनक दू कारण होइत अछि :- (i) आभ्यान्तर (ii) बाह्य

ध्वनि परिवर्त्तन करयवला आभ्यान्तर अथवा आंतरिक कारण निम्न अछि ।

(1) **प्रयत्नलाघव वा मुख सुख** :- प्रयत्नलाघवक सोझ अर्थ होइत अछि अधिक श्रमक अपेक्षा कम श्रम सँ काज चलायब । मानवक ई सहज प्रवृत्ति भाषाक क्षेत्रमे सेहो काज करैत अछि । एहि कारण सँ मनुष्य कम सँ कम शब्दक उच्चारण कऽ अधिक सँ अधिक भाव दोसरा पर प्रकट करय चाहैत अछि ।

जेना :- स्थल सँ थल, पाकिस्तान सँ पाक ।

(2) **आगम** :- जखन कोनो शब्दमे कोनो अक्षर बाहर सँ आबि कें जुटि जाइत अछि तँ ओकरा आगम वा वर्णागम कहल जाइत अछि । जेना – दुख सँ दुक्ख, रख सँ रक्ख, कृपाल सँ कृपाला, दयाल सँ दयाला ।

(3) **लोप** :- उच्चारण शीघ्रता, असावधानी आ अज्ञानता सँ दू सजातीय ध्वनिक समीप भेला पर एक लुप्त भऽ जाइत अछि । ई लोप स्वर, व्यंजन आ अक्षर सँ संबंधित भऽ तीन प्रकारक होइत अछि ।

जेना :- अनाज सँ नाज, नरक सँ नर्क, भण्डागार सँ भण्डार ।

(4) **विपर्यय** :- जखन कोनो शब्द मे ने तँ ध्वनिक आगम होइत अछि आ ने लोप, मुदा शब्दमे विद्यमान ध्वनि सभ परस्पर स्थान बदलि लैत अछि तखन ओ विपर्यय कहबैत अछि ।

जेना :- पागल सँ पगला, वाराणसी सँ बनारस, ब्राह्मण सँ बाभन ।

(5) **समीकरण** :- जखन शब्दमे संग-संग विद्यमान दू भिन्न ध्वनि सभमे सँ एक शक्तिशाली होयबाक कारणे दोसर कें अपन सदृश बना लैत अछि तँ ओकरा ध्वनि समीकरण कहल जाइत अछि । जतय पूर्वध्वनि बादबला ध्वनि कें अपन सदृश बनाय लैत अछि तँ ओकरा पुरोगामी समीकरण आ जखन बादवला ध्वनि पूर्वध्वनि कें अपन सदृश बनाय लैत अछि तँ ओकरा पश्चगामी समीकरण कहल जाइत अछि ।

जेना :- पुरोगामी समीकरण :- चक्र-चक्की, पत्र-पत्ता, पश्चगामी समीकरण-शर्करा सँ शक्कर, कलक्टर सँ कलट्टर ।

(6) **विषमीकरण** :- जखन शब्द मे संग-संग आबयबला दू समान ध्वनि असमान भऽ जाइत अछि तखन ओकरा ध्वनि सभक विषमीकरण कहल जाइत अछि ।
जेना :- केकण सँ कंगन, काक सँ काग ।

(7) **सघोषीकरण** :- जखन शब्दमे विद्यमान कोनो अघोष ध्वनि सघोष भऽ जाय तँ ओ सघोषीकरण कहबैत अछि । जेना :- शकुनक शगुन, शाकक साग ।

(8) **महाप्राणीकरण** :- जखन शब्दमे विद्यमान कोनो अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण भऽ जाय तँ ओ महाप्राणीकरण कहबैत अछि ।

(9) **अल्पप्राणीकरण** :- शब्दमे विद्यमान जखन कोनो महाप्राण ध्वनि अल्पप्राण भऽ जाय तँ ओ अल्पप्राणीकरण कहबैत अछि ।

(10) **बलाघात** :- जखन कोनो शब्द वा पदक सबल ध्वनि निर्बल ध्वनि केँ दबा दैत अछि तँ भाषाक एहि प्रवृत्ति केँ बलाघात कहल जाइत अछि । जेना :- सन्ध्या, बन्ध्या, साँझ आदि ।

